



# तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

“

हलूकरमी मात-पिता हुवें तांहि,  
तिण रें उत्तम जीव उपजें गर्भ मांहि।  
शरीर मांहे रहें सुख समाध,  
दुख दलदर दूर टलें असमाध॥

जो माता-पिता पुण्यात्मा होते हैं उनके घर  
में उत्तम जीव पैदा होता है, शरीर में सुख  
समाधि रहती है। दुःख दारिद्र और असमाधि  
दूर चली जाती है।

— आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली

• वर्ष 27 • अंक 19 • 09 फरवरी - 15 फरवरी 2026



प्रत्येक सोमवार

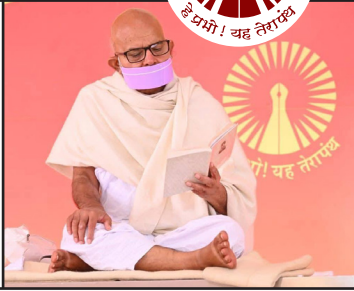
• प्रकाशन तिथि : 07-02-2026 • पेज 12

₹ 10 रुपये



मन की पवित्रता-  
एकाग्रता सुख प्रदान  
करने वाली होती है :  
आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 10



किसी की आत्मा  
का कल्याण करना  
लोकोत्तर दया है :  
आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 12

Address  
Here

## ग्रंथों, पंथों और संतों का उपयोग कर प्राप्त करें ज्ञान : आचार्यश्री महाश्रमण

डीडवाना।

02 फरवरी, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी सोमवार प्रातःकाल की मंगल बेला में अपनी धवल सेना के साथ कोलिया से गतिमान हुए। डीडवाना के श्रद्धालु अपने आराध्य की अगवानी में कोलिया में ही पहुंचना प्रारंभ हो गए थे। मार्ग में गांव के लोगों, स्कूल के विद्यार्थियों ने पूज्य प्रवर के दर्शन किए एवं आशीर्वाद प्राप्त किया। डीडवाना में प्रवेश करते-करते श्रद्धालुओं की भीड़ जुलूस के रूप में परिवर्तित हो गई। विभिन्न समाज के लोगों ने दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। मुस्लिम समाज के लोगों ने शहर काजी के साथ आचार्य प्रवर का अभिनंदन किया। लगभग 12



कि.मी. का विहार संपन्न कर आचार्य प्रवर डीडवाना के अग्रवाल भवन में एक दिवसीय प्रवास हेतु पधारे।

डीडवाना की धरा पर आयोजित मुख्य मंगल प्रवचन कार्यक्रम में

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि ज्ञान, प्रकाश करने वाला होता है, इसलिए व्यक्ति को जितना संभव हो सके ज्ञान प्राप्ति का प्रयास करना

चाहिए। ज्ञान के दो प्रकार को सकता है, एक लौकिक विद्याओं का ज्ञान और दूसरा आध्यात्मिक विद्या का ज्ञान। लौकिक विद्याओं के ज्ञान में शिल्प कला, भूगोल, खगोल, तकनीकी ज्ञान,

नृत्य कला, आदि और अध्यात्म विद्या के ज्ञान में आत्मा, परमात्मा, पुनर्जन्म, पाप-पुण्य, आदि की जानकारी होती है। अध्यात्म विद्या का ज्ञान प्राचीन ग्रंथों से सभी मिल सकता है। संस्कृत, पालि, आदि भाषाओं में अनेक ग्रंथ हैं जिन्हें पढ़कर ज्ञान-प्राप्त किया जा सकता है। एक ज्ञान भीतर से भी उत्पन्न हो जाता है। जिसे अतीन्द्रिय ज्ञान कहते हैं। यह ज्ञान आत्मा से प्रकट होता है जो साधना करके प्राप्त हो सकता है जो महान साधक, ऋषि महर्षियों को प्राप्त होता है।

ग्रंथों को पढ़ने से स्वाध्याय होता है उससे ज्ञान की प्राप्ति व वृद्धि हो सकती है। ग्रंथों, पंथों, और संतों का बढ़िया उपयोग करके व्यक्ति ज्ञान भी प्राप्त कर सकता है और आत्म कल्याण की दिशा में भी आगे बढ़ सकता है।

(शेष पेज 9 पर)

## दुर्लभ मानव जीवन में धर्म करने का करें प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

कोलिया गांव।

01 फरवरी, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अखंड परिव्राजक, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आज रविवार प्रातः कैराप से मंगल प्रस्थान किया और कोलिया गांव स्थित माहेश्वरी भवन में पधारे। आचार्य प्रवर के स्वागत में पूर्व सरपंच सुखाराम डेडवारिया, नगरपालिका पार्षद प्रतिनिधि कमलेश पंवार, रामावतार सोनी ने भावाभिव्यक्ति दी। नरेन्द्र सिंघी ने अपनी अभिव्यक्ति दी तथा सिंघी परिवार ने गीत का संगान किया। सरपंच प्रतिनिधि कुशल ने भी

अपनी अभिव्यक्ति दी।

मुख्य मंगल प्रवचन कार्यक्रम में परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमें मनुष्य जीवन प्राप्त है। 84 लाख जीव योनियों में मनुष्य जन्म को दुर्लभ बताया गया है। मनुष्य जन्म मिल गया और यदि इसे पापों में, व्यसनों में गंवा दिया तो पुनः यह जन्म कब मिले, कहना मुश्किल है। हम भाग्यशाली हैं कि यह दुर्लभ मानव जीवन वर्तमान में प्राप्त है। इस मनुष्य जीवन को हमें पापों में नहीं गंवाकर इसका उपयोग धर्म, ध्यान, साधना, आराधना में करें तो इससे मोक्ष की प्राप्ति भी हो सकती है।



इस मानव जीवन को व्यसनों में, पापों में गंवा देना एक नासमझी की बात हो जाती है। जैसे किसी व्यक्ति को सोने का

थाल मिल जाए और वह उसका उपयोग कूड़ा-करकट फेंकने में करे, खाना खाने व खिलाने में न करे। इसी प्रकार किसी

को अमृत प्राप्त हो जाए तो उसे पीने में उपयोग न करके गंदे पैर धोने में करता है। किसी को चिंतामणि रत्न मिल जाए और उस रत्न का प्रयोग कौवे को भगाने के लिए करे तो ये सभी कार्य व्यक्ति की अज्ञानता या मूर्खता के द्योतक हैं। इसी प्रकार जो व्यक्ति प्रमत्त होकर दुर्लभ मानव जीवन को व्यर्थ गंवाता है, वह भी इन्हीं मूर्ख व्यक्तियों की तरह होता है।

अतः इस मानव जीवन में हम धर्म करें। यह परमात्म पद को पाने का एक रास्ता हमें मिला है। इसे दुर्व्यसनों, लड़ाई-झगड़ा आदि में नहीं गंवाना चाहिए। बेईमानी व धोखाधड़ी से बचने का प्रयास करना चाहिए।

(शेष पेज 9 पर)

# भिक्षु के दृष्टान्तों से समझे दया : आचार्यश्री महाश्रमण

कैराप।

31 जनवरी, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशस्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, अखंड परिव्राजक, योगक्षेम वर्ष प्रवेश के लिए लाडनू की ओर गतिमान है। आज शनिवार प्रातः पूज्य प्रवर बिंवा गांव से गतिमान हुए और लगभग 10 किमी का विहार कर कैराप गांव में स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे।

विद्यालय परिसर में आयोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि अहिंसा, संयम, और तप महान धर्म है। आचार्यश्री भिक्षु ने धर्म जो दया के रूप में है, उसका विश्लेषण किया है। पाप आचरण से आत्मा की रक्षा करना लोकोत्तर दया है, आध्यात्मिक दया है।

दया को समझाने की दृष्टि से तीन दृष्टान्तों को काम में लिया जा सकता है। कैसे एक चोर साधुओं के पास चोरी करने का त्याग करता है और उसकी आत्मा चोरी के पाप से बच जाती है साथ में सेठ का धन भी बच जाता है। एक बकरे को मारने वाले कसाई को संतों ने उपदेश



दिया, बकरो को मारने का त्याग कराया तो उसकी आत्मा का कल्याण हुआ, हिंसा परित्यक्त हुई और बकरो की जान भी बच गई। यहां दया की दृष्टि से ध्यान दें तो साधुओं ने जो प्रयास किया उससे चोरों की आत्मा सुधरी, कसाई ने बकरे मारने का त्याग किया ये दोनों लोकोत्तर दया हुई। साथ में सेठ का धन बचने और बकरो की जान बचने का कार्य भी हुआ है। साधुओं का उद्देश्य केवल आत्मा के कल्याण का था। मान लिया जाए कि

चोरों ने चोरी का त्याग न किया होता और कसाई ने बकरो को मारने का त्याग न किया होता तो भी साधुओं को अपने प्रयास का लाभ मिलता ही मिलता, यहां कोई यह कहे कि सेठ का धन बचना और बकरो की जान बचना भी धर्म है तो इस संदर्भ में तीसरा दृष्टान्त माननीय है।

एक परदार सेवन करने वाले व्यक्ति को साधुओं ने परदार सेवन करने का त्याग कराया, इससे उस व्यक्ति की आत्मा तो सुधरी, लेकिन जो महिला

थी उसने उस व्यक्ति पर आसक्त होने के कारण अपनी जान दे दी। यदि सेठ के धन बचने और बकरे की जान बचने को धर्म मान लिया जाए तो फिर महिला की मृत्यु का पाप भी साधुओं को लगना चाहिए। ऐसे में चोर, कसाई और लंपट व्यक्ति की आत्मा का कल्याण ही साधुओं का मूल लक्ष्य था। साधुओं का मूल कार्य तो आत्म कल्याण का ही होता है।

आचार्यश्री भिक्षु के दृष्टान्तों के साथ

किसी रूप में मुनिश्री हेमराजजी स्वामी भी जुड़े रहे। आज उनका दीक्षा दिवस है। वे तेरापंथ धर्म संघ के एक मात्र संत हैं जिन्हें आचार्य ने शासन महासंघ का अलंकरण प्रदान किया है। आज आचार्यश्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के तृतीय चरण के तृतीय दिवस का कार्यक्रम सुसंपन्न हो रहा है।

आचार्यश्री ने चतुर्दशी के संदर्भ में हाजरी का वाचन किया और साधु-साधवियों को प्रेरणा प्रदान की। तदुपरांत मुनि हेमन्तहिषीजी, मुनि मर्यादाकुमारजी, मुनि आर्षकुमारजी, व मुनि मेघकुमारजी ने आचार्यश्री की आज्ञा से लेख पत्र का उच्चारण किया। पूज्य प्रवर ने मुनि हेमन्तहिषीजी को इक्कीस कल्याणक और अन्य तीन मुनि वृंद को एक-एक कल्याणक बख्शीस किए। तदुपरांत उपस्थित चारित्रात्माओं ने अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र का उच्चारण किया।

आचार्यश्री ने समुपस्थित ग्रामीणों को सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की प्रेरणा दी और ग्रामीणों ने संकल्प स्वीकार किए। आदर्श कान्वेन्ट स्कूल की ओर से गोविंद राखेचा, रूगाराम ढाका ने आचार्यश्री के स्वागत में अपनी अभिव्यक्ति दी।

# संतों और ज्ञानियों से होता है धर्म का बोध प्राप्त : आचार्यश्री महाश्रमण

बिंवा गांव।

30 जनवरी 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशस्ता, तीर्थंकर के प्रतिनिधि, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी छोटी खाटू की धरा पर 10 दिवसीय प्रवास के साथ ही तेरापंथ धर्मसंघ का 162वां मर्यादा महोत्सव सुसंपन्न कर आज प्रातः काल की मंगल बेला में गतिमान हुए। आचार्यश्री के विहार के समय ही भारत सरकार के केन्द्रीय कानून और न्याय मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल भी आचार्यश्री के दर्शनार्थ पहुंचे।

छोटी खाटू मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री मनसुखलाल सेठिया के निवास स्थान में उनके साथ पूज्य प्रवर का वार्तालाप हुआ। आचार्य प्रवर ने मार्ग में अनेकानेक घरों के सामने रूक-रूक कर मंगल पाठ सुनाया। छोटी खाटू के बाहर विहार मार्ग में अनेक स्थानों पर विद्यार्थियों को सद्भावना, नैतिकता व नशा मुक्ति की प्रेरणा प्रदान

की। मार्ग में ही शेराली आबाद के मुस्लिम समुदाय के लोगों ने आचार्यश्री का भावभीना स्वागत किया। पूज्य प्रवर ने मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। मार्ग में अनेक गौशालाओं आदि में पधारते हुए लगभग 10 किमी का विहार सुसंपन्न कर आचार्यश्री बिंवा गांव स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे। विद्यालय परिसर में आयोजित मुख्य मंगल प्रवचन कार्यक्रम में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पावन पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि आदमी सुनकर कल्याण को, धर्म को भी जान लेता है तथा सुनकर पाप को जान लेता है। कल्याण और पाप दोनों को आदमी सुनकर जानता है और फिर जो श्रेयस्कर हो उसका अनुसरण करना चाहिए। आदमी संतों और ज्ञानियों से सुनता है तो धर्म का बोध प्राप्त होता है। अहिंसा, ईमानदारी आदि की प्रेरणा मिल सकती है। हमारे धर्मसंघ के प्रथम आचार्य आचार्यश्री भिक्षु स्वामी हुए। उन्होंने अहिंसा और दया की बात बताई। आदमी के भीतर क्रोध, मान, माया, लोभ कषाय होते हैं। उससे



आदमी कषायी बन जाता है और इनका त्याग कर अकषायी भी बन सकता है। आचार्य प्रवर ने कसाई का दृष्टान्त सुनाते हुए कहा कि संतों के उपदेश से कसाई ने पाप को समझकर आजीवन हिंसा का त्याग किया। अतः सामने वाले को समझाने की भी कला हो कि बात सामने वाले के गले उतर जाए। कसाई ने मुनिजी की बात को सुना, हृदयंगम भी किया और स्वीकार भी कर लिया और बकरो को मारने का त्याग कर लिया। इस घटना से दो कार्य हुए पहला कसाई

की आत्मा, हिंसा का त्याग कर देने के कारण पाप से बच गई, आत्मा की रक्षा हो गई। दूसरा काम हुआ बकरे मरने से बच गए, बकरो का शरीर बच गया। यहां मूल चीज साधुओं का आदेश था वह कसाई की आत्मा को पाप से बचाने के लिए था। यहां कसाई की आत्मा पाप से बची वह विशुद्ध धर्म हुआ, प्रासंगिक रूप में बकरो की जान भी बच गई। यह सिद्धांत है कि निर्जरा के साथ पुण्य का बंध भी होता है। निर्जरा मूल कार्य है और प्रासंगिक रूप में पुण्य का बंध

होता है। धर्म का मूल कार्य आत्मा को पाप से बचाना है, प्रासंगिक रूप में अन्य मौलिक लाभ भी हो सकते हैं। आचार्य भिक्षु के इस तत्त्व परक चिंतन में अहिंसा, त्याग और संयम है, इनका साधुओं द्वारा उपदेश देने से आदमी की आत्मा भी सुधर सकती है और प्रसंग रूप अन्य भौतिक परिणाम भी प्राप्त हो सकते हैं।

पूज्यप्रवर ने आचार्यश्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के तृतीय चरण के मध्य वर्ती दिन आचार्य भिक्षु के साहित्य का स्वाध्याय करने की प्रेरणा प्रदान की और अपने आराध्य का पावन स्मरण किया। मंगल प्रवचन के उपरान्त आचार्य प्रवर ने ग्रामवासियों को सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति की प्रेरणा प्रदान की व संकल्पों का स्वीकरण भी करवाया।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के उप प्रधानाचार्य विकास सैनी व सरपंच महरचंद ने अपनी श्रद्धामिव्यक्ति दी। आचार्यश्री ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

# आठ दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का समापन

विजयनगर।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के विद्वान सुशिष्य डॉ मुनि पुलकित कुमारजी ठाणा 2 के मंगल सानिध्य में आचार्य श्री तुलसी महाप्रज्ञ चेतना सेवा केंद्र में प्रेक्षा फाउंडेशन द्वारा प्रेक्षा फाउंडेशन के तत्वावधान में आठ दिवसीय प्रेक्षाध्यान साधना शिविर का समापन हुआ। शिविर समापन के अवसर पर डॉ मुनि पुलकित कुमारजी ने कहा प्रेक्षाध्यान के द्वारा चित्त शुद्धि

का लाभ होता है। यह आदत परिष्कार की पूर्ण प्रक्रिया है। प्रेक्षाध्यान के प्रयोग केवल सिखाना ही नहीं उसे जीने का प्रयास भी करें। मुनिश्री ने शिविर में उपस्थित प्रेक्षाध्यान साधकों को प्रेरणा देते हुए कहा शिविर में सीखाए गए प्रयोग आपकी जिंदगी में नव चेतना जागृत करने वाले बने इसके लिए नियमित प्रेक्षाध्यान प्रयोग करें।

मुनि पुलकित कुमार ने आठ दिनों के विभिन्न सत्रों में प्रेक्षाध्यान की उपसंपदा, मंत्र प्रेक्षा, श्वास प्रेक्षा, कायोत्सर्ग का

वैज्ञानिक आधार, अनुप्रेक्षा, आसन प्राणायाम का जीवन उपयोगी आधार आदि विषयों पर विवेचन किया तथा शिविर साधकों की गहन जिज्ञासाओं का समाधान भी दिया।

नचिकेता मुनि आदित्य कुमार जी ने ध्यान का जीवन में महत्व, ध्यान क्या है, ध्यान कैसे करें आदि विषयों पर प्रश्नोत्तरी के माध्यम से सेशन लिए। प्रशिक्षण की कड़ी में मुम्बई से पधारी मीना साबदरा ने शिविरार्थियों को आसन प्रणायाम एवं योग, एवं कायोत्सर्ग के

प्रयोग कराये। चेतना केन्द्र के अध्यक्ष ललित मांडोट प्रेम चावत ने शिविर के आयोजन हेतु प्रेक्षा फाउंडेशन एवं टीम प्रेक्षाध्यान शिविर के प्रति आभार व्यक्त किया एवं मुनि श्री के प्रति अपनी मंगल भावना अभिव्यक्त की, संगठन मंत्री विक्रम दुग्गड़, राजाजी नगर सभा अध्यक्ष ने अपने विचार प्रस्तुत किए इस अवसर पर विजयनगर महिला मंडल की अध्यक्ष महिमा पटवारी तेरापंथ युवक परिषद विजयनगर अध्यक्ष आदि उपस्थित थे।

## मर्यादा क्वेस्ट का हुआ आयोजन

कोयंबतूर। साध्वीश्री सिद्धप्रभाजी के पावन सानिध्य में रात्रि कालीन कार्यक्रम में अभातेमम द्वारा निर्देशित मर्यादा क्वेस्ट का आयोजन किया गया।

साध्वीश्रीजी के नवकार मंत्र उच्चारण के पश्चात रेखा मरोठी ने मंगलाचरण किया। भिक्षु, भारीमल, रायचंदजी एवं जीतमलजी चार टीम बनाई गई और चार रोमांचक राउंड खेले गए। क्विज का कुशल संचालन सुरेखा सेमलानी एवं सविता भंडारी ने किया। जीतमल टीम विजेता टीम रही।

## एक वर्ष के प्रवास से जगी 'धार्मिक चेतना' की अलख

बीकानेर, गंगाशहर।

बीकानेर के गंगाशहर क्षेत्र में धर्म, अध्यात्म और तपस्या की गंगा बहाने के पश्चात, उग्र विहारी तपोमूर्ति मुनिश्री कमल कुमार जी स्वामी का 'गुरु दर्शन' हेतु लाइन की ओर विहार निश्चित हो गया है।

**संयम और साधना का जीवंत संदेश-** तेरापंथ न्यास के ट्रस्टी जैन लूणकरण छाजेड़ ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि मुनिश्री का सान्निध्य त्याग और आत्मसंयम का अमूल्य संदेश प्रदान करता है। उन्होंने कहा, 'मुनिश्री ने सिखाया कि साधना केवल वाणी तक सीमित नहीं, बल्कि उसे आचरण में उतारना चाहिए। अल्प समय में आपने हमारे हृदयों में जो संस्कार रोपे हैं, वे सदैव हमारा मार्गदर्शन करेंगे।'

**शिक्षा और अध्यात्म का अनूठा संगम-** आचार्य श्री तुलसी शान्ति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष गणेश बोथरा ने मुनिश्री के प्रवास को बीकानेर क्षेत्र के लिए मील का पत्थर बताया।

**प्रवास काल की ऐतिहासिक उपलब्धियां-** सभा मंत्री जतन लाल संचेती ने कहा घर घर में प्रवचनों की श्रृंखला की शुरुआत हुई जिससे हजारों लोगों को घर बैठे धर्म और अध्यात्म से जुड़ने का मौका मिला।

**तपस्या का कीर्तिमान-** मुनिश्री की प्रेरणा से 48 लोगों ने वर्षीतप, 12 जनों ने मासखमण और 115 से अधिक श्रावकों ने 8 या अधिक दिवस की तपस्या की।

**संस्कार और सेवा-** 'जैन संस्कार विधि' का व्यापक प्रचार हुआ और 13 कार्यकर्ताओं ने 'उपासक' बनने हेतु संकल्पित हुए।

## सर्वाइकल कैंसर पर विशेष कार्यक्रम

**नोखा।** अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेमम नोखा द्वारा कैंसर जागरूकता अभियान के तहत तेरापंथ भवन में शासन गौरव साध्वी राजीमती के सान्निध्य में सर्वाइकल कैंसर पर एक विशेष सेशन रखा गया। जिसमें सीनियर डॉ. शासन सेवी डॉ. P.S. मरोठी ने महिला मंडल को सर्वाइकल कैंसर क्या है और क्यों होता है इसके बारे में डिटेल से बताया। ये ज्यादातर HPV infection से होता है। PMO क्षेत्रीय जिला अस्पताल प्रभारी डॉ. सुनील बोथरा ने बताया कि हमें pap smear testing जरूर करवानी चाहिए ताकि हमें सही समय पर बीमारी का पता चल सके तो इसका इलाज भी सम्भव है। डॉ. गीतिका ने हमें बताया कि सर्वाइकल कैंसर 35 वर्ष से 45 वर्ष की उम्र में ज्यादा होने का खतरा रहता है। हमें अपनी बच्चियों को वैक्सीन भी जरूर लगवानी चाहिए। साध्वी श्री ने कहा कि हमें अपने भावों को भी शुद्ध रखना चाहिए और अनुप्रेक्षा करनी चाहिए कि मैं स्वस्थ हूँ।

## अणुव्रत काव्य संध्या का आयोजन

दिल्ली।

अणुव्रत समिति ट्रस्ट, दिल्ली एवं भारतीय लोक प्रशासन संस्थान, दिल्ली क्षेत्रीय शाखा (IIPA) के संयुक्त तत्वाधान में काव्य संध्या का आयोजन भारतीय लोक प्रशासन संस्थान, दिल्ली क्षेत्रीय शाखा के ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ अणुव्रत समिति ट्रस्ट, दिल्ली के सदस्यों द्वारा सामूहिक संगान से हुआ। अणुव्रत समिति ट्रस्ट, दिल्ली के अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा ने सभी अतिथियों, कवियों तथा उपस्थित सभी संस्थाओं के सदस्यों का स्वागत व अभिनंदन किया। उन्होंने कहा- आज का यह कार्यक्रम भारतीय लोक प्रशासन संस्थान, दिल्ली क्षेत्रीय शाखा के

संयुक्त तत्वाधान आयोजित हो रहा है। उन्होंने आशा व्यक्त की भविष्य में भी अनेक कार्यक्रम दोनों संस्थाओं के संयुक्त रूप से आयोजित होंगे। भारतीय लोक प्रशासन संस्थान दिल्ली क्षेत्रीय शाखा के सचिव संजीव तिवारी ने संस्था की ओर से अणुव्रत समिति ट्रस्ट, दिल्ली का आभार व्यक्त करते हुए कहा आज हर्ष का विषय है कि दोनों संस्थाओं ने सहभागी बनकर आज काव्य संध्या का आयोजन किया है। कार्यक्रम में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के मुख्य न्यासी तेज करण सुराणा आदी की उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन अणुव्रत समिति ट्रस्ट, परामर्शक व भारतीय लोक प्रशासन संस्थान, दिल्ली क्षेत्रीय शाखा के कोषाध्यक्ष डॉ अनिल दत्ता मिश्रा ने किया।

## प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का हुआ आयोजन

टोहाना।

फाउंडेशन के निर्देश अनुसार प्रेक्षा वाहिनी के तत्वावधान में तेरापंथ सभा अध्यक्ष विजय कुमार जैन की अध्यक्षता में प्रेक्षावाहिनी संवाहिका उषा जैन के निर्देश में स्थानीय तेरापंथ भवन में जनवरी मास की प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार मंत्र के उच्चारण किया गया। इसके पश्चात सामूहिक रूप से प्रेक्षाध्यान गीत का

सामूहिक संगान किया गया। इस अवसर पर तेरापंथ सभा के मंत्री सुभाष जैन ने कहा कि प्रेक्षाध्यान आत्मा के द्वारा आत्मा अवलोकन का दर्पण है। जिस प्रकार व्यक्ति चेहरा देखने के लिए दर्पण का प्रयोग करता है।

इसी प्रकार आत्मा के दर्शन के लिए प्रेक्षाध्यान एक सशक्त माध्यम है। प्रेक्षा ध्यान से आत्मा निर्मल बनती है तथा शरीर निरामय बनता है। इससे आदि व्याधि और उपाधि दूर होती है। इस अवसर पर दीर्घश्वास प्रेक्षा, अनुप्रेक्षा

एवं कायोत्सर्ग के विभिन्न प्रयोगों का व प्राणायाम व आसनों का प्रयोग किया गया। इसके अतिरिक्त आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के रिकॉर्डेड प्रवचन का श्रवण भी किया गया। प्रेक्षावाहिनी संवाहिका उषा जैन ने सभी का आभार व्यक्त किया।

इस कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष विजय कुमार जैन, मंत्री सुभाष जैन, महिला मंडल अध्यक्ष आरती जैन, कोषाध्यक्ष सरोज जैन, उषा जैन, पूनम जैन संतोष जैन तथा प्रीति जैन ने इस कार्यशाला में भाग लिया।

**पावन स्मृति**

**सेठ हरगोपाल नन्हीदेवी जैन मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि.)**

सी-2/12, अपर ग्राउंड फ्लोर, प्रशांत विहार सेक्टर- 14, रोहिणी, दिल्ली 85



**श्रद्धांजलि श्रावक स्व. हरगोपाल जैन**

**स्वर्गवास**

**12-02-1979**



**श्रद्धा की प्रतिमूर्ति स्व. नन्ही देवी जैन**

**स्वर्गवास**

**18-02-2007**

आदमी को पुण्य की भी इच्छा नहीं करना चाहिए। उसे हेय और उपादेय को अच्छी तरह जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए। - आचार्यश्री महाश्रमण

नत्थूराम कुसुमलता जैन, नरेश जयश्री जैन, विनोद-कविता जैन, पुनीत गरिमा जैन, रितिक जैन, यशस्वी जैन, हेमांक जैन

(उकलाना-हिसार-दिल्ली)

# 162वें मर्यादा महोत्सव पर विविध आयोजन

## होसकोटे

आचार्य महाश्रमण जी के सुशिष्या साध्वी संयमलताजी ने गुरुदेव के निर्देश अनुसार मर्यादा महोत्सव का आयोजन होसकोटे में करने हेतु आज क्षेत्र में मर्यादा रैली के साथ भव्य प्रवेश किया। साध्वीश्री ने कहा, मर्यादाओं का महोत्सव एकमात्र तेरापंथ धर्मसंघ में ही मनाया जाता है तेरापंथ धर्मसंघ के इस विलक्षण महोत्सव का आयोजन करने का प्रथम अवसर प्राप्त हुआ है इसलिए श्रावकों के दिलों अभाया उत्साह है, उमंग है, इसका उत्साह व जुनून ही कार्यक्रम की सफलता का प्रथम सोपन है, मीडिया व टेक्नोलॉजी के युग में खुद को संयमित रखते हुए मर्यादा व अनुशासन में रहकर अपने जीवन को उन्नति की दिशा में ले जाएं।

## नागपुर

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा द्वारा अणुव्रत भवन में 162वां मर्यादा महोत्सव कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र के द्वारा किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मीनू बोथरा द्वारा किया गया। संचालन के दौरान तेरापंथ धर्म संघ में मर्यादा महोत्सव का महत्व मर्यादाओं से हम अपने जीवन की शैली को किस तरह सुंदर एवम व्यवस्थित बना सकते हैं उस पर विविध उदाहरण के माध्यम से समझाने का सुंदर प्रयास किया। मंडल की बहनों द्वारा उपस्थित सभी से मर्यादा के क्वेश्चन और पहली पुछे गए। आभार ज्ञापन विजय रांका ने किया।

## इरोड

महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी पावन प्रभाजी आदि ठाणा - 4 के पावन सान्निध्य में स्थानीय तेरापंथ भवन में आयोजित तेरापंथ धर्म संघ का महाकुम्भ 162वां मर्यादा महोत्सव आयोजित हुआ। सर्वप्रथम मंगलाचरण से कार्यक्रम को प्रारंभ किया गया। आचार्यश्री भिक्षु स्वामी का भी संगान द्वारा गुणवान किया गया। सभा द्वारा स्वागत भाषण, महिला मण्डल, युवक परिषद द्वारा भी संगान द्वारा अभिव्यक्ति हुई। धर्मसंघ के गणमान्यों की भी उपस्थिति रही।

## सुथान, बीदासर

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के 162वें मर्यादा महोत्सव का आयोजन शासनश्री साध्वी बसंतप्रभा, साध्वी रचनाश्री, केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी

मंजूयशा व सभी चारित्र आत्माओं के सान्निध्य में किया गया। कार्यक्रम में स्वागत वक्तव्य सभा अध्यक्ष संपतमल बैद ने दिया और कहा कि गुरुदेव के आशीर्वाद से बीदासर में आज चतुर्विध धर्मसंघ के साथ 30 चारित्र आत्माओं का सान्निध्य प्राप्त है। शासन श्री साध्वी रमावती, साध्वी श्री संकल्पश्री ने अपने वक्तव्य के द्वारा मर्यादा का महत्व बताया। शासन श्री साध्वी साधना श्री, शासन श्री साध्वी विमलप्रभा ने गीतिका के माध्यम से अपनी भावना व्यक्त की। शासन श्री साध्वी बसंतप्रभा, साध्वी रचनाश्री, केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी मंजूयशा जी ने भी मर्यादा के बारे में उद्बोधन देते हुए संघ की मर्यादाओं का उल्लेख करते हुए तेरापंथ धर्मसंघ को प्राणवान संघ बताया और कहा कि यहां गुरु आज्ञा ही सब कुछ है, गुरु आज्ञा बिना कुछ नहीं है। साध्वी वृंद द्वारा रोचक नाटिका के माध्यम से मर्यादा का महत्व बताते हुए उसको अक्षुण्ण रखने का संदेश दिया गया। कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद व तेरापंथ कन्या मंडल ने गीतिका के माध्यम से अपनी भावना व्यक्त की। आभार ज्ञापन सभा मंत्री हनुमान मल सेठिया द्वारा किया गया। संचालन साध्वी चिन्मयप्रभा द्वारा किया गया।

## नोखा

मर्यादा और अनुशासन से ही विकास होता है। तेरापंथ धर्म संघ में एक आचार्य एक आचार एक विचार और ताण, शारण, सेवा मर्यादा ही प्राण तत्व है। आचार्य भिक्षु द्वारा लिखी मर्यादा आज भी क्षुण है। जयाचार्य ने महोत्सव का रूप दे दिया। आचार्यश्री महाश्रमणजी के नेतृत्व में सात सौ से अधिक साधु-साधवियां एक आचार्य की आज्ञा में हैं। छोटी खाटू में 162वां मर्यादा महोत्सव विशाल रूप में हो रहा है। देश में अनेक स्थानों पर आयोजित है। यह उद्गार शासन गौरव साध्वी राजीमती ने नोखा में कहे। तेरापंथ महिला मण्डल द्वारा श्रद्धा भव गीत का संगान किया गया। साध्वियों द्वारा मर्यादा ही प्राण है गितिका से सबको मंत्र मुग्ध कर दिया। डा. प्रेम कुमार मरोठी, सभा उपाध्यक्ष लाल चन्द वेले, कवि इन्द्रचन्द बैद अध्यक्ष प्रीती मरोठी ने अपने विचार रखे।

## सूरत

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्म संघ द्वारा समग्र देश में 162 वें मर्यादा महोत्सव को बड़े हर्षोल्लास से मनाया गया। स्थानीय स्तर पर उनके ही सुशिष्य मुनि डॉ. मदन

कुमार जी, शासन श्री साध्वी मधुबाला जी एवं प्रोफेसर डॉक्टर साध्वी मंगल प्रज्ञा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, सिटीलाइट में तेरापंथ धर्म संघ के 162 वें मर्यादा महोत्सव का शानदार आयोजन किया गया। इस अवसर पर उपस्थित विशाल जनमेदिनी को संबोधित करते हुए मुनि डॉ. मदन कुमार जी ने कहा - आचार्य भिक्षु महान साधक थे। वे आगमों के प्रखर ज्ञाता थे। उन्होंने तेरापंथ धर्म संघ की स्थापना की, साथ ही उसकी दीर्घजीविता के लिए मर्यादाओं का निर्माण भी किया। यही कारण है कि तेरापंथ धर्म संघ आज प्रगति के नए-नए शिखरों पर आरोहण कर रहा है। श्रावक श्राविकाओं को भी अपने सांसारिक जीवन में मर्यादाओं एवं अनुशासन को स्थान देना चाहिए। उन्होंने कहा - प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में ध्यान और योग को स्थान दें, आवेश पर नियंत्रण करें, क्रोध-गुस्से का त्याग करें एवं भोजन में संयम अपनाएं। यह छोटी-छोटी मर्यादाएं भी जीवन को सुखमय, शांतिमय और आनंदमय बनाने के लिए समर्थ हैं। शासनश्री साध्वी मधुबाला जी ने कहा - 2 तेरापंथ की मर्यादाएं ही तेरापंथ का संविधान बन गई हैं। यहां एक ही गुरु की आज्ञा के अनुसार समग्र धर्म संघ चलता है। गुरु की आज्ञा के सिवाय एक पत्ता भी हिल नहीं सकता। साधु हो या साध्वी श्रावक हो या श्राविका हर कोई यहां पर गुरु आज्ञा को शिरोधार्य करता है। साध्वी प्रोफेसर डॉक्टर मंगल प्रज्ञा जी ने कहा- तेरापंथ धर्म संघ आचार्य श्री भिक्षु की साधना का प्रतिफल है। इसे आचार्य श्री जयाचार्य, आचार्य श्री तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञ एवं वर्तमान में आचार्य श्री महाश्रमणजी जैसे महाप्रतापी आचार्य प्राप्त हुए हैं। तेरापंथ धर्मसंघ उसकी मर्यादाओं के फलस्वरूप ही विलक्षण धर्मसंघ बना है। मर्यादाएं तेरापंथ धर्म संघ की आन बान और शान हैं।

तेरापंथ नाम का वटवृक्ष आज फला फूल है उसके मूल में है तेरापंथ की मर्यादाएं। आज के दिन हर व्यक्ति को यह सोचना है कि मेरे परिवार में मर्यादा और अनुशासन कितना है? पिछले दरवाजे से नशे का दूषण भी कुछ-कुछ स्थानों पर प्रवेश कर रहा है। आज के दिन प्रत्येक व्यक्ति नशा मुक्त रहने का संकल्प करें यह अपेक्षित है। मुनि संयम कुमार जी, कल्प कुमार जी एवं साध्वियों द्वारा प्राण वक्तव्य दिए गए एवं मधुर गीत का संगान किया गया। तेरापंथी सभा अध्यक्ष हजारीमल भोगर ने स्वागत वक्तव्य दिया। संचालन साध्वी मंजूयशा जी ने किया।

## कोयंबतूर

साध्वीश्री सिद्ध प्रभा आदि ठाणा चार के सान्निध्य में तीन दिवसीय मर्यादा महोत्सव का कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम में कुन्नूर, तिरुप्पुर से पधारे संघ के अलावा कोयंबतूर की उपस्थिति भी बहुत अच्छी थी। कार्यक्रम की शुभ शुरुआत ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी द्वारा मंगलाचरण से हुई। सभा उपाध्यक्ष धनराज सेठिया ने सभी का स्वागत किया। साध्वी मलययशजी जी, साध्वी आस्थाप्रभाजी और दीक्षा प्रभाजी ने मर्यादा पर सुमधुर गीत का संगान किया। साध्वी दीक्षा प्रभाजी ने संघ की आयरन डोम फार इम्यूनिटी को बहुत रोचक ढंग से समझाया। कुन्नूर महिला मंडल ने गीत प्रस्तुत किया। तिरुपुर मंडल ने साध्वीश्री से दर्शन सेवा की याचना की। साध्वी सिद्ध प्रभाजी ने श्रावकों से विशेष कर खानपान की शुद्धि बनाए रखने की प्रेरणा दी एवं संकल्प भी करवाया। निर्मल बेगवानी ने श्रावक निष्ठा पत्र का सम्मुचरण करवाया। सभामंत्री अजय बुच्चा ने आभार ज्ञापन किया।

## बीदासर

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्या शासनश्री साध्वी बसंतप्रभा जी, साध्वी रचनाश्री जी और समाधि केन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी मंजूयशा जी के सान्निध्य में मर्यादा महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। शासनश्री साध्वी बसंतप्रभा जी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा तेरापंथ धर्मसंघ में गुरु आज्ञा को सर्वोपरि स्थान दिया गया है। गुरु आज्ञा के बिना इस संघ में कोई कार्य नहीं होता। अगर कोई आज्ञा के बिना कार्य करता है तो उसे उसका परिणाम भी भोगना पड़ता है। डालगणि के समय का प्रसंग जब आचार्य प्रवर ढीढवाणा बिराजे थे। 21 किलोमीटर दूर लाडनू सेवा केन्द्र से कुछ साध्वियां गुरुदेव के दर्शनाथ, एक ही दिन में विहार कर ढीढवाणा गाँव बाहर पहुंची थी। डालगणि को जब इस बात का पता चला तो उन्होंने उन साध्वियों से कहा कि तुम लोग बिना आज्ञा के ही इधर आ गई हो इसलिए वहीं से पुनः लाडनू चली जाओ। साध्वियां बिना गुरु दर्शन किए ही वापस लौट गईं। साध्वी रचनाश्री जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ एक तेजस्वी धर्मसंघ है। गण में रहने वाला विकास को प्राप्त होता है। जो गण को छोड़ देता है वह अपना सौभाग्य हाथ से खो देता है।

शिष्य उदायण ने अपने गुरु से प्रश्न करता है गुरुदेव तेजस्वी, बुद्धिमान कौन

होता है। गुरु में अपने समक्ष रखे हुए अंगेठी में से एक अंगारे को चिमटे से बाहर निकाल कर रख दिया। कुछ ही क्षणों में वह अंगारा निस्तेज हो गया। कारण पृष्ठने पर शिष्य ने बताया कि यह अंगारा अंगेठी से अलग हो जाने से निस्तेज हो गया। फिर गुरु ने बताया कि ठीक इसी प्रकार जो शिष्य गण में रहता है वह तेजस्वी, यशस्वी, बुद्धिमान और सौभाग्य सम्पन्न होता है। गण से बाहर निकलते ही वह निस्तेज हो जाता है इसलिए गण का महत्व है। उसमें ही तेरापंथ धर्मसंघ एक विशिष्ट धर्मसंघ है जो प्रत्येक साधक को मर्यादाओं का आलम्बन देता है। वह उसके साध्य की सिद्धि में सहयोग करता है। केन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी मंजूयशाजी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ एक मर्यादित और शक्तिशाली धर्मसंघ है। शक्ति के 5 मूल तत्व हैं। पहला अनुशासन बल जो संघ को शक्तिशाली बनाता है। दूसरा है सिद्धान्त बल। आचार्यश्री भिक्षु ने सिद्धान्त पर बहुत बल देकर इस संघ की नींव को मजबूत कर दिया। तीसरा तत्व है। मनोबल। आचार्य भिक्षु के जीवन में अनेक विरोधी तूफान आए पर उनका मनोबल इतना मजबूत था कि इन सब की परवाह न करते हुए अपने आत्मपथ पर बढ़ते गए। चौथा तत्व अध्यात्म बल। जिन्हे अध्यात्म बल प्राप्त नहीं होता वह कभी भी बड़ा नहीं बन सकता। पाँचवां तत्व है समाधान बल। अगर आचार्यश्री भिक्षु के पास यह बल नहीं होता तो उनकी वाणी को कोई नहीं सुनता। उन्होंने समय की नब्ज को पहचाना और इन 5 तत्वों से इस शक्तिशाली संगठन का निर्माण हो गया। जो प्रतिदिन विकास की ऊर्चाईयों को प्राप्त कर रहा है। शासनश्री साध्वी साधनाश्री जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। साध्वी रमावती जी, साध्वी संकल्पश्री जी, साध्वी रोहितयशा जी ने गीत और विचारों के माध्यम से अपनी प्रस्तुति दी। साध्वी रोहितयशा जी ने गीत और विचारों के माध्यम से अपनी प्रस्तुति दी। साध्वी जयंतयशा जी, साध्वी इन्दुप्रभा जी, साध्वी ऋजुप्रभाजी, साध्वी वीरप्रभाजी, साध्वी गीतार्थप्रभा जी, साध्वी नमनप्रभाजी, साध्वी मानसप्रभाजी और साध्वी स्तुतीप्रभा जी ने आधुनिकता के साथ तेरापंथ के अनुशासन, व्यवस्था और मर्यादाओं को उद्घाटित करने वाले रोचक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष संपतमल बैद, मंत्री हनुमानमल सेठिया ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी चिन्मयप्रभा जी ने किया।

## संक्षिप्त खबर

# महिला कैंसर स्क्रीनिंग कैंप सफलतापूर्वक सम्पन्न

मदुरै। भगवान महावीर जैन चैरिटेबल ट्रस्ट, मदुरै के तत्वावधान में जैन हॉस्पिटल एंड लैब्स, साउथ वेली स्ट्रीट में आयोजित महिला कैंसर स्क्रीनिंग कैंप अत्यंत सफलतापूर्वक एवं सुव्यवस्थित रूप से सम्पन्न हुआ। इस शिविर का उद्देश्य महिलाओं में कैंसर के प्रति जागरूकता बढ़ाना एवं प्रारंभिक जांच द्वारा समय रहते रोग की पहचान करना था। कैंप में बड़ी संख्या में महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ उठाया।

## निःशुल्क कैंसर जांच शिविर आयोजित

कांटाबांजी। तेरापंथ युवक परिषद एवं तेरापंथ महिला मंडल द्वारा, बालको मेडिकल सेंटर नया रायपुर के मिलीत तत्वावधान में निःशुल्क कैंसर जांच एवं परामर्श शिविर का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन, कांटाबांजी में आयोजन किया गया। जिसमें कुल 61 लोगों की जांच हुई। इस शिविर में कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ. दिव्येंदु दे और डॉ. हेमलता सीध ने अपनी सेवा प्रदान की।

## रक्तदान शिविर का आयोजन

पूर्वांचल-कोलकाता। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद, पूर्वांचल-कोलकाता द्वारा आयोजित इस सत्र के 28th वें रक्तदान शिविर कार्ला रेस्टोरेट के साथ में किया। जिसमें कुल 30 यूनिट रक्त का दान प्राप्त हुआ। शिविर की आयोजना में विशेष सहयोग प्राप्त हुआ कार्ला रेस्टोरेट, के यशवंत सोनी व पदाधिकाारीगण एवं स्टाफ्स का। परिषद सभी के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती है।

## निःशुल्क सर्वाइकल कैंसर टेस्ट का आयोजन

यशवंतपुर। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में यशवंतपुर महिला मंडल द्वारा वर्ल्ड कैंसर डे पर निःशुल्क सर्वाइकल कैंसर टेस्ट का आयोजन किया जा रहा है। उस उपलक्ष में कैंसर कैंप के बैनर का अनावरण मुख्य अतिथियों ने किया। अध्यक्ष रेखा पीतलिया ने सभी का स्वागत किया। निवर्तमान अध्यक्ष मीनाक्षी दक ने सभी को सर्वाइकल कैंसर के फ्री कैंप में अपनी जांच कराने की प्रेरणा दी। डॉ. आर. नागरथना जो कैंसर कर्नाटक कैंसर सोसायटी की सेक्रेटरी हैं उन्होंने सर्वाइकल कैंसर के बारे में और ब्रेस्ट कैंसर के बारे में सभी को जानकारी दी। मुख्य अतिथि कांटा प्रांत के अध्यक्ष गौतम मूथा ने कर्नाटक कैंसर सोसाइटी के कार्य सेवा और नागरत्ना के सामाजिक सेवा की जानकारी देते हुए सभा परिषद की पूरी टीम को मंडल के आरोग्यम अभियान में सहयोग करने का आह्वान किया। कैंसर कैंप के प्रायोजक महावीर गन्ना भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम की जानकारी एवं जांच के दौरान जिन दिशा निर्देश का पालन करना है इसकी जानकारी संयोजिका प्रीति मुथा ने दी। संचालन मंत्री टीना पीतलिया ने किया। प्रिया डूंगरवाल ने सभी का आभार व्यक्त किया।

## सेवा कार्यक्रम

अहमदाबाद। अनलॉक हैपिनेस 5.0 के अंतर्गत नगर निगम के स्वच्छता कर्मियों के लिए Sweet Distribution कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ किशोर मंडल अहमदाबाद द्वारा किया गया। इस सेवा-कार्य के अंतर्गत अहमदाबाद म्युनिसिपल कॉरपोरेशन के लगभग 350 स्वच्छता कर्मचारियों को Sweet Boxes वितरित किए गए।

## 162वें मर्यादा महोत्सव पर विशेष

# ओ संघ के सिपाही! जब तुममें भी दम होगा

● मुनि ध्रुव कुमार ●

ओ संघ के सिपाही! जब तुममें भी दम होगा।  
तब ही तो अपना शासन प्रवर्धमान होगा।।  
जिन शासन में भैक्षव शासन लगता सबसे प्यारा है।  
ग्यारह आचार्यों की मेहनत का यह सुखद नजारा है।  
शासन पावन निर्झर झरता, तन मन जीवन उज्ज्वल करता।  
शासन नंदनवन है, प्राणों से प्यारा।  
वर्धमान होता जाएं, हम सबके द्वारा।।  
एकनिष्ठ बन रहने वाले शासन भक्त महान है।।  
एक-एक मोती से बनती मुक्ताओं की माला है।  
एक-एक ही बूंद बनाती अतिविस्तृत जलशाला है।  
हर एक सैनिक बड़ा उपयोगी,  
अपनी अपनी योग्यता है अपना अपना योगी  
महाउपकारी गुरुवर हम सबको तारें  
उनकी कृपा से अपना रूप निखारे  
इससे बढ़कर बतलाओ क्या गुरु-दाक्षिण्य प्रदान रे।।  
हर मीटिंग में आगे सीटिंग अगवाणी की होती है।  
नहीं किसी से न्यून कभी सहवर्ती महंगे मोती है।  
इसीलिए तो यदा-कदा भी मांगे इनकी होती है।  
घर को रोशन करने वाली यह जग मगती ज्योती है।  
बच्चा हो बूढ़ा या फिर कोई रोगी, कला हो तुम्हारी तो बने उपयोगी।  
अग्रणी जो वीर योद्धा, सहवर्ती सारथी।  
अग्रणी है पूजा तो, सहवर्ती आरती।  
वही अग्रणी अमर रहे, पीढी जिसकी तैयार है।।  
तीर्थंकर प्रतिनिधि बन कर गुरु धर्मध्वज फहराते है।  
धन्य-धन्य है अग्रगण्य वे गुरु प्रतिनिधि कहलाते है।  
भाग्य विधाता गुरुवर जिनका संरक्षण दिरवाते है।  
गुरु करुणा से रात दिवस वे पथदर्शन करवाते है।  
सफल सहवर्ती है जो बने उनकी छाया, दृष्ट भी देख बोले अद्भुत माया  
जिसने भी अपना सुंदर घर है जमाया, आगे चलकर के वो ही कुछ बन पाया।  
हेम ऋषी के पास निखरते जयाचार्य भगवान है।।  
श्रावक वर्धमान हो पाए, सीखे तत्वज्ञान को।  
हेत परस्पर रखें सदा ही, साधे गहरे ध्यान को।  
गुरुवर की आज्ञा को शीघ्र चढ़ाई, इंगित पाकर अपने चरण बढ़ाएं  
भक्त तुम्हारे भगवन! करते हैं अर्जों, कब, क्या करवाना भंते! यह तेरी मर्जी।  
बोरावड़ की जनता मांगे, महा मोच्छव उपहार है।।  
(लय- मिनखां थ्रे जागो रे...)

# तेरापंथ-मेरापंथ कार्यशाला का सफल आयोजन

राजाजीनगर।

तेरापंथ महासभा द्वारा निर्देशित तेरापंथ सभा राजाजीनगर द्वारा डॉ. मुनि पुलकित कुमार जी के मंगल सानिध्य में तेरापंथ मेरापंथ कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ सभा भवन में किया गया।

मुख्य वक्ता के रूप में मुंबई से पधारे प्रवक्ता उपासक सुधांशु जैन थे। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में डॉ. मुनिश्री ने कहा आचार्य भिक्षु भगवान महावीर की वाणी के प्रति पूर्ण समर्पित थे। आगमवाणी के आधार पर तेरापंथ के सिद्धांतों को स्थापित किया उनके धर्म क्रांति का आधार साधु चर्या की जागरूकता एवं आत्म अनुशासन का विकास था। नचिकेता मुनि आदित्य कुमार ने गीत के द्वारा प्रस्तुति दी।

मुंबई से पधारे उपासक सुधांशु जैन ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा तेरापंथ मेरापंथ कार्यशाला के माध्यम से श्रावक समाज को तेरापंथ के सिद्धांतों का ज्ञान करवाना हमारा उद्देश्य है। मोक्ष प्राप्ति के लिए ही प्रत्येक श्रावक का हर कार्य होना चाहिए। उपासक जी ने आगे कहा कई बार श्रावक भी संतों के लिए प्रेरणा बन जाते हैं जैसे मेवाड़ राजनगर के श्रावक आचार्य भिक्षु के लिए बने थे। सुधांशु जैन ने तेरापंथ के सिद्धांतों को विस्तार से समझाते हुए कहा तेरापंथ के सिद्धांत अपने आप में यूनिक और आध्यात्मिक गति प्रगति करवाने वाले सिद्धांत है। तेरापंथ मेरापंथ कार्यशाला में लौकिक लोकोत्तर दया और दान, साध्य और साधन की शुद्धि, तेरापंथ और मूर्ति पूजा तथा पुण्य और निर्जरा का संबंध विषय पर चार सत्रों में प्रोजेक्टर के माध्यम से प्रस्तुति दी। जिज्ञासा और समाधान का सत्र भी रोचक रहा। तेरापंथ सभा द्वारा उपासक का अभिनंदन किया गया। स्वागत भाषण अध्यक्ष अशोक चौधरी ने किया।

बेंगलुरु से महासभा के नवनियुक्त आंचलिक प्रभारी महेंद्र दक का स्वागत अभिनंदन किया गया। तेरापंथ सभा गांधीनगर अध्यक्ष पारसमल भंसाली, आदि की उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन जैन संस्कारक रनित कोठारी तथा संचालन मंत्री चंद्रेश मांडोट ने किया।

# अनुशासन का पर्व है मर्यादा महोत्सव

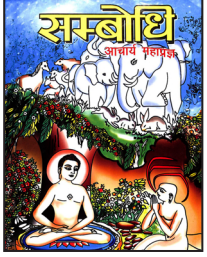
आरकोणम, तमिलनाडु।

आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी सोमयशाजी ठाणा-3 के सान्निध्य में आरकोणम तेरापंथ भवन में 162वाँ मर्यादा महोत्सव का आयोजन हुआ। सेवा कैसे करनी चाहिए। सेवा से हमें क्या प्राप्त होता है। उससे संबंधित अनेक बातें बताई, अनेक प्रयोगों के माध्यम से सेवा का महत्त्व बताया। सेवा करने वाला स्वयं

का और दूसरे का परम उपकार करता है। अपनी आत्मा को उज्ज्वल बनाता है। तेरापंथ धर्मसंघ की सेवा हम सबके लिए अनुकरणीय है। छठ के दिन अनुशासन संबंधी विशेष प्रवचन देते हुए कहा तेरापंथ धर्मसंघ अनुशासन की दृष्टि से उच्चता को प्राप्त है। यदि हम इसकी मीमांसा में जाए तो हमें तीन बातें विशेष रूप से नजर आएंगी, तीसरा दिन मर्यादा का उत्सव आचार्य भिक्षु ने इसकी नींव में मर्यादा का ऐसा शिला

खण्ड रखा जो इस महल को निरंतर सुदृढ़ आधार प्रदान कर रहा है, भिक्षु के बाद जयाचार्य जी ने उनके अनुभवों का लाभ उठाते हुए तेरापंथ को एक नया अवदान प्रदान किया जिसकी पहचान 'मर्यादा महोत्सव' के रूप में विश्वव्यापी बनी। साध्वी डॉ. सरलयशाजी 'सेवा संस्कार दिवस' पर विचारों की अभिव्यक्ति दी। स्वागत भाषण अध्यक्ष अरिहंत डरला ने किया। आभार गजराज बरडिया ने किया।

## संबोधि

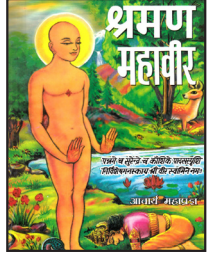


### परिशिष्ट



-आचार्यश्री महाप्रज्ञ-

## श्रमण महावीर



### सह-अस्तित्व और सापेक्षता

शंकर ने कहा- 'रावण का जन्म हुआ है।' कुछ ही क्षणों बाद फिर वैसी ही आवाज हुई और नन्दी ने फिर प्रश्न किया। शिवजी बोले-रावण की मृत्यु हो गई। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ, पूछा, यह कैसे ? अभी जन्मा और अभी मृत्यु ! शंकर ने कहा-जगत का यही स्वरूप है। जगत उत्पत्ति और विनाश से संयुक्त है।

शरीर में अनेक व्याधियां उत्पन्न होती हैं। शरीर व्याधि-आधि का मन्दिर है। उसे और क्या क्लेश दिया जाए ? इससे बढ़कर और कष्ट हो भी क्या सकता है ? किन्तु जो इसे नहीं जानते, देखते, उन्हें दूसरी क्रियाएं कष्टप्रद प्रतीत होती हैं। साधक शरीर को कष्ट नहीं देता, किन्तु शरीर को साधना के अनुकूल बनाता है। शरीर को साधना का अभ्यास नहीं है। उसने जो कुछ देखा है, अनुभव किया है, वह अनुकूल का किया है। प्रतिकूल स्थिति उसे स्वयं कष्टपूर्ण लगती है। कुछ व्यक्ति विवश होकर महीनों तक एक जैसी स्थिति में पड़े रह सकते हैं। वे बहुत दुःख पाते हैं। किन्तु विवशता है। साधना की स्थिति में साधक स्व-वशता पूर्वक वैसा अभ्यास करता है, जिससे संसार की चंचलता समाप्त हो और आत्म-दिशा में आगे बढ़ा जा सके। काय की अस्थिरता मन को अस्थिर बना देती है। मन के चंचल होते ही धारणा, ध्यान विक्षिप्त हो जाता है। इस दृष्टि से आसन-विजय या काय-क्लेश का स्थान महत्त्वपूर्ण है। गौतम ने भगवान् महावीर से पूछा-भंते ! काय-क्लेश का प्रतिपादन क्यों किया ? भगवान् महावीर ने उत्तर दिया- 'गौतम ! सुख-सुविधा की चाह आसक्ति लाती है। आसक्ति से चैतन्य मूर्च्छित हो जाता है। मूर्च्छा धृष्टता लाती है। धृष्ट व्यक्ति विजय का पथ नहीं पा सकता। इसलिए मैंने यथाशक्ति काय-क्लेश का विधान किया है।

गौतम ने पूछा- 'भगवन् ! काय-क्लेश क्या है?' भगवान् ने कहा-'गौतम ! कायोत्सर्ग करना, आसन करना, आतापना लेना, निर्वस्त्र रहना, शरीर का परिकर्म नहीं करना, यह सब काय-क्लेश है।'

शरीर की आदत न होने के कारण यह सब उसे कष्टपूर्ण प्रतीत होता है। इसलिए इसे काय-क्लेश कहा है। ध्यान की स्थिति में सबसे बड़ी बाधा शरीर की होती है। थोड़ी सी देर स्थिर बैठना संभव नहीं है। कभी पैरों में दर्द, सनसनाहट, खुजली आदि विविध प्रकार की सूचनाएं प्राप्त होने लगती हैं। ध्यान निर्विघ्न नहीं होता। शरीर को अभ्यास है विषयों का। ध्यान निर्विषय है, एकाग्रता है। जैसे ही वह एकाग्र होता है शरीर सहन नहीं कर सकता। शरीर का स्वामित्व मन और आत्मा पर सर्वदा चलता रहा। जब उस पर शासन की स्थिति पैदा होती है तब वह बगावत करना शुरू कर देता है। काय-क्लेश का मूल सूत्र है-देह पर स्वामित्व की स्थापना करना, देह की चुनौती झेलने की क्षमता पैदा करना, स्वयं का मालिक स्वयं होना, इन्द्रिय, मन और शरीर के शासन से मुक्ति पाना। साधना का यही सार है।

(क्रमशः)

काला या सफेद होना, मीठा या कड़वा होना, सुगंध या दुर्गन्ध होना, उष्ण या शीत होना, चिकना या रूखा होना, मृदु या कठोर होना, हल्का या भारी होना पर्याय है। इसलिए वे अनित्य हैं, परिवर्तनशील हैं। इनके तल में परमाणु हैं। वे नित्य हैं, शाश्वत हैं। ये सब पर्याय उन्हीं में घटित होते हैं। इनके होने पर भी परमाणु विघटित नहीं होता।

ये विरोधी प्रतीत होने वाले पर्याय एक ही आधार में घटित होते हैं, इसलिए वस्तु जगत में सबका सह-अस्तित्व होता है, विरोध नहीं होता। विश्व व्यवस्था के नियमों में कहीं भी विरोध नहीं है। उसकी प्रतीति हमारी बुद्धि में होती है। इस समस्या को भगवान् ने सापेक्ष-दृष्टिकोण और वचन-भंगी द्वारा सुलझाया। वस्तु में अनन्त युगल-धर्म हैं। उनका समग्र अनन्त दृष्टिकोण से ही हो सकता है। उनका प्रतिपादन भी अनन्त वचन-भंगियों से हो सकता है। वस्तु के समग्र धर्मों को जाना जा सकता है, पर कहा नहीं जा सकता। एक क्षण में एक शब्द द्वारा एक ही धर्म कहा जा सकता है। एक धर्म का प्रतिपादन समग्र का प्रतिपादन नहीं हो सकता और समग्र को एक साथ कह सकें, वैसा कोई शब्द नहीं है। इस समस्या को निरस्त करने के लिए भगवान् ने सापेक्ष-दृष्टिकोण के प्रतीक शब्द 'स्यात्' का चुनाव किया।

'जीवन है' - इस वचनभंगी में जीवन के अस्तित्व का प्रतिपादन है। जीवन केवल अस्तित्व ही नहीं है, वह और भी बहुत है। 'जीवन नहीं है' इसमें जीवन के नास्तित्व का प्रतिपादन है। जीवन केवल नास्तित्व ही नहीं है, वह और भी बहुत है। इसलिए 'जीवन है' और 'जीवन नहीं है' - यह कहना सत्य नहीं है। सत्य यह है कि 'स्यात् जीवन है', 'स्यात् जीवन नहीं है।'

अस्तित्व को अस्वीकार नहीं किया जा सकता, इस कोण से वह है। नास्तित्व को स्वीकार किए बिना उसका अस्तित्व सिद्ध नहीं होता, इस कोण से वह नहीं है। उसके होने और नहीं होने के क्षण दो नहीं हैं। वह जिस क्षण में है, उसी क्षण में नहीं है और जिस क्षण में नहीं है, उसी क्षण में है। ये दोनों बातें एक साथ कही नहीं जा सकतीं। इस कोण से जीवन अवक्तव्य है।

वेदान्त का मानना है कि ब्रह्म अनिर्वचनीय है। भगवान् बुद्ध की दृष्टि में कुछ तत्त्व अव्याकृत हैं। भगवान् महावीर की दृष्टि में अणु और आत्मा, सूक्ष्म और स्थूल-सभी वस्तुएं अवक्तव्य हैं किन्तु अवक्तव्य ही नहीं हैं, वे अखण्ड रूप में अवक्तव्य हैं। खण्ड के कोण से वक्तव्य हैं। हम कहते हैं- आम मीठा है। इसमें आम के मिठास गुण का निर्वचन है। केवल मिठास ही आम नहीं है। उसमें मिठास जैसे अनन्त गुण और पर्याय हैं। कुछ गुण बहुत स्पष्ट हैं। वह पीला है, सुगंधित है, मृदु है। 'आम मीठा है' - इसमें आम के रस का निर्वचन है किन्तु वर्ण, गन्ध और स्पर्श का निर्वचन नहीं है। हम अखण्ड को खण्ड के कोण से जानते हैं और कहते हैं। उसमें एक गुण मुख्य और शेष सब तिरोहित हो जाते हैं। इस आविर्भाव और तिरोभाव के क्रम में वस्तु के अनन्त खण्ड हो जाते हैं और उनके तल में वह अखंड रहती है। अखण्ड का बोध और वचन सत्य होता ही है। खण्ड का बोध और वचन भी सत्य होता है, यदि उसके साथ 'स्यात्' (अपेक्षा) शब्द का भाव जुड़ा हुआ हो।

एक स्त्री बिलौना कर रही है। एक हाथ आगे आता है दूसरा पीछे चला जाता है। फिर पीछे वाला आगे आता है और आगे वाला पीछे चला जाता है। इस आगे-पीछे के क्रम में नवनीत निकल जाता है। सत्य के नवनीत को पाने का भी यही क्रम है। वस्तु का वर्तमान पर्याय तल पर आता है और शेष पर्याय अतल में चले जाते हैं। फिर दूसरा पर्याय सामने आता है और पहला पर्याय विलीन हो जाता है। इस प्रकार वस्तु का समुद्र पर्याय की ऊर्मियों में स्पंदित होता रहता है। अनेकान्त का आशय है, वस्तु की अखण्ड सत्ता का आकलन-ऊर्मियों और उनके नीचे स्थित समुद्र का बोध। स्याद्वाद का आशय है-एक खण्ड के माध्यम से अखण्ड वस्तु का निर्वचन।

सापेक्षता के सिद्धान्त की स्थापना कर भगवान् ने बौद्धिक अहिंसा का नया आयाम प्रस्तुत किया। उस समय अनेक दार्शनिक तत्त्व के निर्वचन में बौद्धिक व्यायाम कर रहे थे। अपने सिद्धान्त की स्थापना और दूसरों के सिद्धान्त की उल्थापना का प्रबल उपक्रम चल रहा था। उस वातावरण में महावीर ने दार्शनिकों से कहा- 'तुम्हारा सिद्धान्त मिथ्या नहीं है। पर तुम अपेक्षा के धागे को तोड़कर उसका प्रतिपादन कर रहे हो, खण्ड को अखण्ड बता रहे हो इस कोण से तुम्हारा सिद्धान्त मिथ्या है। अपेक्षा के धागे को जोड़कर उसका प्रतिपादन करो, मिथ्या सत्य हो जाएगा और खण्ड अखण्ड का प्रतीक।' इस भावधारा में निमज्जन कर एक जैन मनीषी ने महावीर के दर्शन को मिथ्या दृष्टियों के समूह की संज्ञा दी। जितनी एकांगी दृष्टियां हैं, वे सब निरपेक्ष होने के कारण मिथ्या हैं। वे सब मिल जाती हैं, सापेक्षता के सूत्र में श्रृंखलित होकर एक हो जाती हैं तब महावीर का दर्शन बन जाता है।

(क्रमशः)

## जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

### आचार्यश्री रायचंद जी युग

### साध्वीश्री रामांजी (माधोपुर) दीक्षा क्रमांक 224

साध्वीश्री संयम में रत होकर सतत् तपस्या के क्षेत्र में अपने चरण आगे बढ़ाती रहीं। आपने उपवास से 21 दिन तक लड़ीबद्ध तप किया और 30, 31, 44 का एक-एक विशेष तप किया।

- साभार : शासन समुद्र -

## धर्म है उत्कृष्ट मंगल



**-आचार्यश्री महाश्रमण**  
**जयाचार्य की लोकप्रिय**  
**कृति : चौबीसी**



इक्कीसवीं गीतिका में यह तथ्य इस प्रकार पद्यबद्ध किया गया है-

सुर अनुत्तर विमाण नां सेवै रे, प्रश्न पूछ्यां उत्तर जिन देवै रे।  
अवधिज्ञान करी जाण लेवै ॥

### दुःख में सुख

नारकीय जीव दुःखबहुल जीवन जीते हैं। कुछ सुखद क्षण भी उन्हें नसीब होते हैं। तीर्थकरों के कल्याणक-गर्भाधान, जन्म, दीक्षा, कैवल्य प्राप्ति एवं निर्वाण के समय वे अनायास सुखानुभूति करते हैं। बाईसवें गीत का निम्नांकित पद्य इसी तथ्य को प्रकट करता है-

नेरिया पिण पामै मन मोद, तुझ कल्याण सुर करत विनोद ॥

### दुःख का मूल

पांचवीं गीतिका में काव्यकार कहते हैं- दुर्गति का मूल कषाय- क्रोध, मान, माया और लोभ है। ऐन्द्रियिक विषयों के प्रति होने वाली मूर्च्छा मोक्ष-सुख या इन्द्रियातीत सुखानुभूति का बाधक तत्त्व है।

दुर्गति-मूल कषाय, शिव-सुख नां अरि शब्दादिक कहा ॥

### प्रभु बनने का उपाय

आठवीं गीतिका में भगवत्-प्राप्ति का मार्ग बतलाया गया है। परम संतोष की प्राप्ति अपने आपको पाने का रास्ता है। वीतराग का ध्यान करने से वीतरागता प्राप्त हो सकती है।

अहो! वीतराग प्रभु तू सही, तुम ध्यान ध्यावै चित रोक हो।

प्रभु: तुम तुल्य ते हुवै ध्यान स्यू, मन पायां परम सन्तोष हो ॥

### मोक्ष-साधन

ग्यारहवीं गीतिका में मोक्ष के साधक तत्त्वों की चर्चा की गई है। संयम, तप, जप, शील, अनित्य अनुप्रेक्षा, अशरण अनुप्रेक्षा और अनन्त या अन्यत्व अनुप्रेक्षा इनकी आराधना से शिव-प्राप्ति होती है।

### क्षमा

साधना का एक सूत्र है क्षमा। करुणा-भाव का अभ्यास उसका सहायक तत्त्व है। करुणाशील व्यक्ति क्रोध से छुटकारा पा लेता है। बारहवीं गीतिका में इसी भावना का सूक्त प्राप्त है- करुणागर कदेइ नहीं कोपै।

### समता

समता धम्ममुदाहरे मुणी - भगवान महावीर ने समता को धर्म कहा है। भगवान महावीर की स्तुति में निर्मित चौबीसवीं गीतिका में जयाचार्य कहते हैं-मान, अपमान, निन्दा, प्रशंसा, हर्ष-शोक आदि द्वन्द्वात्मक स्थितियों में समत्व की साधना करने वाला व्यक्ति परम शान्ति और निर्वाण को प्राप्त हो सकता है।

### आत्म-कर्तृत्व

जैनधर्म का मत है-सुख-दुःख का कर्ता आत्मा स्वयं है। अपनी आत्मा ही मित्र और वही शत्रु है। दूसरा कोई हमारा मित्र या शत्रु नहीं है। इस सिद्धान्त को अन्तश्चेतना से स्वीकारने वाला व्यक्ति राग-द्वेष और पारस्परिक वैमनस्य से बच सकता है। जैन आगम कहते हैं- अप्पा मित्तममित्तं च दुप्पट्टिय सुपट्टिओ- सत्प्रवृत्ति में संलग्न आत्मा मित्र और दुष्प्रवृत्ति में निरत आत्मा शत्रु है। इन्हीं भावों को अभिव्यक्त करता है चौथी गीतिका का पद्यांश-

आतम मित्री हो सुखदाता सम परिणाम,  
एहिज अमित्र असुभ भावे कलकली।

### देहध्यान-मुक्ति

आत्मानुभूति के लिए देहध्यान को छोड़ना अथवा कायोत्सर्ग आवश्यक है। महावीर ने प्रव्रज्या के समय संकल्प किया-वोसटूचतदेहे विहरिस्सामि मैं साधनाकाल में शरीर का व्युत्सर्ग और त्याग कर विहार करूंगा। विशिष्ट साधना करने के लिए शरीर की साज-सज्जा और सार-संभाल का परिहार अपरिहार्य होता है। प्रथम गीतिका में आचार्य कहते हैं- इम तन सार तजी करी, प्रभु केवल पाया। (क्रमशः)

## संघीय समाचारों का मुखपत्र



तेरापंथ टाइम्स

की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें  
<https://abtyp.org/prakashan>

समाचार प्रकाशन हेतु

abtypptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा 8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

फरवरी 2026

सप्ताह के विशेष दिन

16 फरवरी

भगवान  
वासुपूज्य जन्म  
कल्याणक एवं  
पक्खी

17 फरवरी

भगवान  
वासुपूज्य दीक्षा  
कल्याणक

19 फरवरी

भगवान  
अरनाथ च्यवन  
कल्याणक

21 फरवरी

भगवान  
मल्लिनाथ च्यवन  
कल्याणक

## जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री कालूरामजी युग

मुनिश्री उगमराजजी (देवरिया) दीक्षा क्रमांक 507

मुनिश्री उग्र तपस्वी थे। आपने कई वर्षों तक प्रत्येक माह चार (4) तेले किये। सं 2026 से प्रायः प्रतिवर्ष एक मासखमण तथा कभी-कभी वर्ष में तीन-तीन मासखमण तक कर लेते थे। आपने उपवास से 31 दिन तक लड़ीबद्ध तप किया आपके तप की समग्र सूची इस प्रकार है- उपवास/594, 2/7, 3/672, 4/6, 5/2, 6/2, 7/2, 8/2, 9/1, 10/1, 11/1, 12/1, 13/1, 14/1, 15/1, 16/1, 17/1, 18/1, 19/1, 20/1, 21/1, 22/1, 23/1, 24/1, 25/1, 26/1, 27/1, 28/1, 29/1, 30/34, 31/1। आप 37 मासखमण में 33 मासखमण मौनसहित किये। आपके द्वारा किये गये 37 मासखमण तथा उपवास से 31 दिन तक क्रम बद्ध तप करने का तेरापंथ धर्मसंघ में प्रथम कीर्तिमान है। आपने 19 दिन की तपस्या के दिन पड़िहारा से छापार 19 किलोमीटर का विहार किया।

- साभार : शासन समुद्र -

## शासनश्री साध्वी कानकंवर जी की स्मृति में उद्गार

### अनासक्ति और अप्रमत्ता विरक्ति का प्रतिरूप साध्वी कानकुमारी जी

#### ● शासन गौरव साध्वी राजीमती ●

शासनश्री साध्वी कानकुमारी जी (चुरू) का साथ लगभग 62 वर्षों तक रहा। उन्होंने मुझे जितना वात्सल्य और सन्मान दिया, वह अनिर्वचनीय है। परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी के शासनकाल में कई कीर्तिमान बने हैं उसमें एक कड़ी और साध्वी कानकुमारी जी का संथारा होगा। उन्होंने जिस बढ़ती भावों की श्रेणी से उपवास पचखा था, वही भावों की श्रेणी उनकी अन्तिम समय तक रही। उनकी विरक्ति के कुछ बोलते प्रसंग हैं-

- उन्होंने किसी भी मौसम में कभी शरीर पर कोई प्रसाधन का प्रयोग नहीं किया, तेल, ग्लिसरीन भी नहीं।
- पहली गोचरी में जो आया, बस वही पर्याप्त था। बार बार कुछ नहीं मंगवाती न प्रतीक्षा करती थी।
- 98 की उम्र तक उन्होंने न कभी शरीर दबवाया, न मालिश करवाई। अन्तिम दिनों तक पंचमी से आकर पैरों को पैरों को हिलाती थी। खुद योगासन करती थी।

- स्वावलम्बन पसंद था। इसलिए समताश्री जी से कहती, ज्यादा उम्र काम की नहीं है। स्वावलम्बन खत्म होने पर जीने का मजा नहीं रहता।
- जागरूक इतनी थी कि अन्तिम दिनों में अनशन की अवस्था में भी दोनों टाइम विधि पूर्वक प्रतिलेखन करती।
- अपना काम जो हो सके स्वयं करने का प्रयत्न करती, कोई जबरदस्ती दूसरा कर दे तो दूध पीने का त्याग करती ऐसा संकल्प कर रखा था।
- रजोहरण से बराबर नहीं पूजना, खुले मुंह बोलना तथा तहत् नहीं बोलना ये सब उन्हें पसंद नहीं था।
- दूसरों की प्रमोद भावना तो उनमें उत्कृष्ट थी। सबको (कोई भी कार्य कर दें तो) कृपा कराई कहती ही रहती। मुझे भी कहती समय समय पर सत्यां रा गुण कर्या करो, अब ईयां ही तेयारा होसी।
- सिंघाड़े आने पर बहुत खुश होती। रूकने का आग्रह करती।

- वे अल्पाहारी, अल्पनिद्रा अल्पभावी अल्प परिग्रही एवं अल्पकवायी थी। परिग्रह रूप में अनेक पस मुट्ठी भर सामान था- एक चलोका एक आगली एक छोटी डायरी और एक पेन।
- अमृत कलश (प्रथम प्रति) उसे ही जगह-जगह टेप लगाकर पढ़ती, दूसरी नहीं ली। नया कवर भी नहीं लगाती थी।
- तेरापंथ प्रबोध के पोथिये में दो पद्य कम थे। दूसरा नहीं लेकर उसी में अपने हाथ से लिख लिये।
- सबसे बड़ी साधना काले कालं समायरे- इस हेतु पूर्ण सजग थी। अनशन की अवस्था में भी 3 बजे उठकर अपना जाप स्वाध्याय करती।
- अनशन के समय भी मुझे बार-बार पूछती मेरी कोई गलती हो तो बताओ मुझे प्रायश्चित्त दे शुद्ध करवाओ।
- इस तरह अनेक गुणोंका समवाय थी साध्वी श्री कानकुमारी जी।
- उनकी आत्मा उध्वारोहण करती हुई परम लक्ष्य को प्राप्त करें। मंगलकामना।

### पुण्यवान आत्मा : साध्वी कानकुमारी जी

#### ● साध्वी प्रभातप्रभा ●

आगम ग्रंथों में एक सूक्त आता है 'पतेयं पुण्यपावं अर्थात् पुण्य पाप अपने होते हैं। इस बात का अनुभव हम जीवन के हर क्षेत्र में कर सकते हैं। आपने भी कभी अनुभव किया होगा एक व्यक्ति बहुत त्याग बलिदान करके भी यश प्राप्त नहीं कर पाता और दूसरा जरा सा हाथ हिलाता है कि उसे पूरा कार्य करने का यश प्राप्त हो जाता है। कारण है अपने पूर्व संचित पुण्य।

ऐसी ही एक पुण्यवान आत्मा का जन्म चुरू के सुराणा परिवार में हुआ। गणाधिपति गुरुदेव तुलसी के हाथ जिन्होंने संयम पथ स्वीकार किया और 34 वर्ष की निर्बाध संयमयात्रा का पालन कर जिन्होंने अपनी देह को छोड़ इस संसार को अलविदा कह दिया।

#### वे पुण्यवान थीं क्योंकि-

- हर कोई उनके पास बैठना चाहता था
- हर कोई उनकी बात मानता था।
- वो जो चाहती वैसा प्रायः हो जाता।
- गोचरी में भी कोई द्रव्य विशेष चाहिए होता तो बिना किसी विशेष प्रयत्न के वह प्रायः प्राप्त हो जाता था।
- उनका कार्य करने को सब तत्पर रहते थे।
- उनके संकल्प त्याग कभी टूटे नहीं।
- वे कभी निराश हताश या तनावग्रस्त नहीं हुईं।
- वे राजसी ठाट से दुनिया में आई, उसी ठाट से चली गईं।
- अनशन में लोगों का मेला लगा रहा।
- तीसरा मनोरथ उन्होंने पूर्ण किया।
- गुरुदेव ने जिनको भली साध्वी/अच्छी साध्वी अभिधा से अभिहित किया।
- अन्त में चमकता दिव्य ललाट उनकी पुण्यवानी का प्रतीक है।
- शान्ति से श्वास निकलना भी पुण्यवानी ही है।
- शारीरिक स्वास्थ्य प्रायः उनका अच्छा रहा- ये भी पुण्य प्रताप ही है।

#### उनकी पुण्यवता कैसे बढ़ी-

वे कारण जिससे पुण्याई बढ़ाई जा सकती है जिससे इनकी पुण्याई बढ़ी।

- वे द्रव्यों का संयमित उपयोग करती- चाहे पानी हो चाहे कपड़ा चाहे किताब आदि।
- वे अनासक्ति की साधिका थी- कोई उनसे किसी उनकी वस्तु की मांग करता, वह तत्काल दे देती।
- वे अपरिग्रह को जीती थी- परिग्रह के नाम पर उनके पास न कोई वस्तु थी, न व्यक्ति जिस पर उनकी मूर्च्छा हो।

- वे अनाकर्षण में रहती- नई वस्तु प्राप्त होने पर भी वह 20-30-40 वर्ष पुरानी अपनी वस्तुओं का उपयोग करती थी।
- वे ज्ञान ध्यान में मस्त रहती थी- अपने आप में रहना अपनी किताबों में जाप में ध्यान से
- वे अल्पभावी थी- ज्यादा बातें व्यर्थ की बातें उन्हें ज्यादा पसंद नहीं थी
- वे सत्यवादी थी- असत्य संभाषण उन्हें पसंद नहीं थी जो है वह मुंह पर बोलने में सकुचाती नहीं थी।
- वे अप्रमत्त थी- स्वयं भी प्रमाद नहीं करती, दूसरे करते तो कहती क्यूं खोटी हो वो जावो आपरो काम करो (अनशन के दिनों में भी)
- दूसरों का हित चिन्तन करती थी- कैसे दूसरे का भला हो- उनका चिन्तन यही रहता था।
- वे वात्सल्य व विनय की प्रतिभूति थी- छोटी को वात्सल्य देना तथा बड़े के प्रति विनय भाव रखना दोनों गुण उनमें बराबर थे।
- वो प्रमोद भावना बहुत भाती- कोई छोटा सा कार्य भी कर दे तो उसके गुणगान करती रहती।
- वे सकारात्मक दृष्टिकोण रखती- चाहे कैसी भी परिस्थिति हो वो हमेशा अच्छे पहलू पर ही ध्यान देती पोजिटिव रहती।
- वे संघ संघपति के प्रति पूर्ण समर्पित थी- संघ निष्ठा गुरु निष्ठा से वह खुद भी सराबोर थी, हमको भी निरन्तर प्रेरित कर संघ निष्ठा गुरु निष्ठा के संस्कार भरती थी।
- वे आत्मनिष्ठ थी- सबसे ज्यादा वे आत्म की पवित्रता पर ध्यान देती। बात पर हमको कहती पाप से डरो, साधुपन इतना सस्ता नहीं है।
- संयम निष्ठा बेजोड़ थी- संयम में कोई दोष, कोई दाग उन्होंने जीवन भर नहीं लगाया।
- वे आचारनिष्ठ थी- आचार में गड़बड़ी उन्हें बिल्कुल मान्य नहीं थी। इसके लिए वह बहुत कड़ा अनुशासन भी करती थी।
- संकल्प शक्ति की धनी थी- जो संकल्प वे कर लेती फिर कोई भी उन्हें डिगा नहीं सकता था।

मेरी दृष्टि में ये कुछ कारण हैं, जिनसे उनकी पुनवानी बढ़ी होगी, हालांकि उन्होंने इस दृष्टि से इनका उपयोग शायद ही किया हो क्योंकि वह आचार्य भिक्षु की इस वाणी को जीने वाली थी पुण्य की वांछा करना भी हेय है। फिर भी ये सभी कारण हैं जिसने उनको जनप्रिय और हर मन प्रिय बना दिया। ऐसी पुण्यवान आत्मा अपने चरम लक्ष्य को शीघ्रतिशीघ्र प्राप्त करें ऐसी मंगल कामना व कोटिशः नमन।

### धन्य थे अनशन धारयो है

#### ● शासनश्री साध्वी मानकुमारी ●

धन्य थे अनशन धारयो है

ई मन रो सार निकालण नै मनडै न मारयो है लंबो जीवन लंबो संयम लंबी सोच विचार उजवालयो जीवन अरु शासन निर्मलता श्री कार॥

सहज सरलता स्वावलंबिता अजब गजब थारी गणनिष्ठा गुरु निष्ठा निरखी महकी फुलवारी॥

चुरू नै चमकायो सतिवर सुराणा परिवार नोखा में अब लीला लहरा हो रही जय जयकार॥

कान मान भगिनी रो जोड़ो गण वत्सल साक्षात शासन गौरव री सन्निधि में नई बनाई ख्यात॥

तीन तीन आचार्यों रो थे पायो सुख सायो संथारो कर मुक्ति रो थे झंडो फहरायो॥

मानकुमारी करै कामना शिव रमणी वरज्यो कर्मकटक स्यु झूझ रह्या झट भव सागर तरज्यो॥

लय - तावड़ा धीमो पड़ज्या रे...

### श्रद्धा सुमन समर्पित

#### ● साध्वी कनकरेखा, साध्वी गुणप्रेक्षा ●

#### ● साध्वी संवरविभा, साध्वी हेमंतप्रभा ●

कानकंवरजी शासनश्रीजी नव इतिहस बणायो, चढ़ते भावां अनशन पचख्यो जीवन दीप जलायो। बोलो शासन री जयकार, बोलो अनशन की जयकार॥

महावीर रो शासन पायो कितां हा सौभाग्य। भैक्षवशासन नंदनवन सो पुण्याई है जागी। महातपस्वी महाश्रमणजी-2 शासन शिखर चढ़ायो॥

तुलसी कर स्युं दीक्षा लेकर जबरी ख्यात बनाई, शासन गौरव राजीमती जी साझी सेवा सवाई। कानकुमारी, मानकुमारी, संयम साथ निभायो॥

मौन साधना, पापभीरुता, इन्द्रिय संयम भारी, पल पल खिण-खिण जागरूकता, उज्ज्वलतां भावां री। आत्म भिन्न शरीर भिन्न है-2 जीवन सूत्र सुहायो॥

श्रदा भक्ति को संगम, नोखा है साताकारी, भक्ति भाव स्युं दर्शन खातिर आवै है नर नारी। अनशन रो ओ स्वर्णिम अवसर, यश परचम फैलायो॥

तर्ज : माईन माईन

## मंगल भावना का कार्यक्रम आयोजित

सुजानगढ़।

तेरापंथ सभा भवन में शासनश्री साध्वी सुप्रभाजी एवं साध्वी प्रमिला कुमारी जी के सान्निध्य में मंगल भावना का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से किया गया। राजकुमारी भुतोडिया, शोभा देवी सेठिया द्वारा महावीर अष्टकम से मंगलाचरण किया गया। अणुव्रत समिति अध्यक्ष निर्मल कोठारी, कन्या मंडल संयोजिका युक्ता भुतोडिया सभी ने अपने भावों

की अभिव्यक्ति भाषण और गीतिका के माध्यम से दी। साध्वी वृंद द्वारा सामूहिक गीतिका का संगान किया गया। साध्वी मनीषाश्री जी ने बताया कि यहां कई बड़े-बड़े साधु संतों का विराजना हुआ है। सुजानगढ़ की धरा इतिहास में एक अनुपम स्थान लिए हुए है। ऋषिराय ने इसे सींचा है और सुजानगढ़ का क्षेत्र एक ऐसा क्षेत्र है जो इतिहास के पन्नों में अंकित है। आपने बताया की थली क्षेत्र तो हम सबका पीहर सा बन गया है। साध्वी प्रमिला कुमारी जी ने भाई बहनों को प्रेरित

करते हुए कहा कि आप संघ की ऐसे ही सेवा करें और निरंतर विकास की ओर अग्रसर रहें। शासनश्री साध्वी सुप्रभा जी की टीम को साधुवाद देते हुए कहा कि टीम दमदार हो तो काम भी दमदार हो जाता है। मंगल पाथेय शासनश्री साध्वी सुप्रभा जी ने फरमाया।

सुजानगढ़ के सभी श्रावक-श्राविकाओं ने हमारी सार सभाल अच्छे से की है सभी संस्थाएं ऐसे ही गतिमान होती जाएं और तेरापंथ धर्म संघ का नाम रोशन करती रहे। सफल संयोजन मंत्री डॉ. पूजा फुलफगर किया।

## तेरापंथ-मेरापंथ कार्यशाला का आयोजन

दिल्ली।

आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के अवसर पर अपने आराध्य को ज्ञानात्मक एवं आध्यात्मिक अभिवंदना हेतु भिक्षु चेतना वर्ष के अंतर्गत महासभा द्वारा निर्देशित कार्यक्रम तेरापंथ-मेरापंथ कार्यशाला का आयोजन जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, दिल्ली द्वारा अणुव्रत भवन के प्रांगण में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के आज्ञानुवर्ती शासनश्री मुनि विमल कुमार जी एवं

बहुश्रुत मुनि उदित कुमार जी स्वामी ठाणा 7 के सान्निध्य में कार्यशाला आयोजित हुई जिसमें प्रशिक्षक के रूप में उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय संयोजक सूर्य प्रकाश श्यामसुखा द्वारा विशिष्ट शैली में प्रेरक एवं प्रभावक प्रशिक्षण से उपस्थित श्रावक समाज लाभान्वित हुआ। शासनश्री मुनि विमल कुमार जी ने सभी से उपासक श्रेणी में आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा दी एवं कहा कि इसके माध्यम से कर्म निर्जरा करते हुए अपने सम्यक ज्ञान का विकास

करें। कार्यशाला में आचार्य श्री महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष कन्हैयालाल पटवारी, दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, उपाध्यक्ष बाबूलाल दुगड़ एवं तेरापंथ युवक परिषद दिल्ली अध्यक्ष पवन श्यामसुखा, क्षेत्रीय सभाओं, महिला मंडल व अणुव्रत समिति के पदाधिकारीगण सहित श्रावक श्राविका का समाज की अच्छी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का कुशल संचालन दिल्ली सभा के मंत्री विकास बोथरा ने किया।

### स्मृति सभा

नोखा। आचार्य श्री महाश्रमण की शिष्या शासनश्री साध्वी कानकंवर जी 98 वर्षीय के देवलोक गमन पर स्मृति सभा का आयोजन नोखा में किया गया। शासन गौरव साध्वी राजीमती जी ने कहा- साध्वी कानकंवर जी का जीवन अनासक्ति, विरक्ति और पापभीरू पवित्रता निर्मलता का जीवन था। हजारों गाथाओं का स्वाध्याय माला जाप करती। चूरू के सुराणा परिवार में जन्म और बाल्यावस्था में गुरुदेव तुलसी के पर कमल से चूरू में 14 संत 14 सतिया के एक साथ ऐतिहासिक दीक्षा महोत्सव में ली। सभा अध्यक्ष शुभकरण चोरडिया, मंत्री मनोज घीया, ते.यु.प. अध्यक्ष निर्मल चोपड़ा ने व्यवस्था सुंदर बनाने और हर दृष्टि से संथारा बैकुंठी यात्रा को सफल बनाने पर आभार बताया।

समणी ज्योति प्रज्ञा, समणी मानष प्रज्ञा ने महान आत्मा साध्वी कानकंवर को अद्भुत व चमत्कारी बताया। संचालन साध्वी कुसुम प्रज्ञा ने किया। 36 गांवों के सैकड़ों लोगों ने संथारे पर दर्शन लाभ लिया। साध्वी पुलकित यशा, साध्वी प्रभात प्रभा, साध्वी मनोज प्रभा ने भी साध्वी कानकंवर के विरल संस्मरण संयम के प्रति अंतिम तक जागरूकता के सुना कर रोमांचित कर दिया।

### पृष्ठ 1 का शेष

ग्रंथों, पंथों, और संतों...

यह धरती का सौभाग्य है कि धरती पर संत लोग भी हैं जिनकी संगति और उपदेशों से सम्यक् ज्ञान प्राप्त हो सकता है और व्यक्ति सुख और शांति को प्राप्त कर सकता है। आचार्य प्रवर ने आगे कहा कि हम लोग डीडवाना आए हैं। यहां पहले ही आना हुआ। यहां के लोगों में आपसी सद्भाव बना रहे और नैतिकता, आदि का विकास हो।

आचार्यश्री के स्वागत में स्वागताध्यक्ष धर्मेन्द्रसिंह मुणोत, सुरेश घोड़ावत ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल ने गीत का संगान किया। सुरेश चंद चोपड़ा ने अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी। डीडवाना की बहन-बेटियों ने भी स्वागत में अपनी प्रस्तुति दी। अग्रवाल समाज की महिलाओं ने गीत प्रस्तुत किया।

अग्रवाल समाज की ओर

से हरीश मोदी, आदि सदस्यों ने अभिवंदन पत्र का वाचन किया और आचार्यश्री के समक्ष अभिनंदन पत्र अर्पित किया।

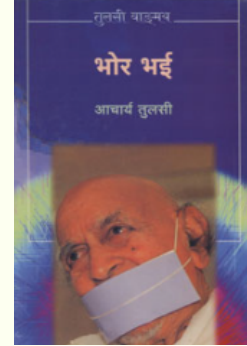
दुर्लभ मानव जीवन...

साधु संतों की संगति, परमात्मा का स्मरण करना चाहिए। जो व्यर्थ कार्यों और पापा चरणों में समय गंवाता है, वह नरक, तिर्यंच जैसी अद्योगतियों को भी प्राप्त हो सकता है। अतः अपनी आत्मा के कल्याण के लिए व्यक्ति को अपना जीवन धर्म से युक्त बनाने का प्रयास करना चाहिए।

जीवन में अहिंसा, संयम, और नशामुक्तता रहे। जिस व्यक्ति का जीवन अच्छा होता है उसे सद्गति भी प्राप्त हो सकती है। आचार्य प्रवर ने उपस्थित ग्रामीणों को सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति की प्रेरणा प्रदान करते हुए इनके संकल्प स्वीकार करवाए।

## बोलती किताब

### भोर भई



आचार्य श्री तुलसी बीसवीं सदी के उन विशिष्ट संतों में अग्रगण्य थे जिनकी दृष्टि केवल धर्म तक सीमित नहीं थी, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के व्यापक आयामों को भी समेटती थी। उनका व्यक्तित्व बहुआयामी था—आध्यात्मिक साधना, नैतिक जागरण और सामाजिक चेतना का अद्भुत समन्वय उनके कर्तृत्व में स्पष्ट दिखाई देता है। उन्होंने निरंतर यह प्रयास किया कि मनुष्य अपनी अन्तर्निहित नैतिक शक्ति को पहचानकर उसे व्यक्तिगत उत्थान तथा समाज-सुधार की दिशा में प्रयोग करें। उनके जीवन और कार्य ने सिद्ध किया कि सच्ची आध्यात्मिकता व्यवहार में उतरकर ही समाज को नई दिशा प्रदान कर सकती है।

आचार्य श्री ने अणुव्रत-आंदोलन के माध्यम से एक अनूठी धर्मक्रांति की शुरुआत की। यह आंदोलन किसी संप्रदाय-विशेष तक सीमित नहीं रहा, बल्कि मानवीय मूल्यों की वैश्विक पुनर्स्थापना का अभियान बना। पदयात्राओं के जरिए उन्होंने गाँव-गाँव और नगर-नगर में जन-जागरण फैलाया। जैन विश्वभारती संस्थान की स्थापना उनके इसी शिक्षा-समर्पित चिंतन की परिणति कही जा सकती है, जिसने आज उच्च शिक्षण के क्षेत्र में एक विशिष्ट पहचान बनाई है।

साहित्य सृजन भी आचार्य श्री के कार्यक्षेत्र का महत्वपूर्ण पक्ष था। कई विधाओं में और अनेक भाषाओं में रचित उनका साहित्य न केवल हिन्दी-जैन वाङ्मय को समृद्ध करता है, बल्कि आधुनिक चिंतन और आध्यात्मवाद के बीच एक सेतु भी निर्मित करता है। उनके लेखन में वह ताजगी और प्रासंगिकता आज भी महसूस होती है, जो रचना-क्षणां में थी। तुलसी वाङ्मय के रूप में उनके साहित्य एवं जीवन-दृष्टि पर संपादित सामग्री निरंतर उपलब्ध कराई जा रही है।

आचार्य श्री के चिंतन का केंद्रीय सूत्र संयम रहा—“संयमः खलु जीवनम्।” उनका मानना था कि आधुनिक युग की अधिकांश समस्याओं का मूल लोभ-वृद्धि और भोगवृत्ति है। अतः समाधान भ्रष्टाचार नहीं, बल्कि संयम और समभाव से संभव है। प्रस्तुत प्रवचन-डायरी (1954) में उनके उन उद्बोधनों का संगृहीत स्वरूप है, जो आज भी मानवता को अभाव और अतिभाव के संघर्ष से निकालकर आत्मानुभूति और नैतिक शांति की ओर ले जाने का पाथेय प्रदान करते हैं।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :

आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती

+91 87420 04849 / 04949 <https://books.jvbharati.org> [books@jvbharati.org](mailto:books@jvbharati.org)

## सर्वाइकल कैंसर अवेयरनेस कार्यक्रम का ऑनलाइन आयोजन

नागपुर।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार नागपुर तेरापंथ महिला मंडल सर्वाइकल कैंसर अवेयरनेस कार्यक्रम का ऑनलाइन आयोजन Zoom App के द्वारा किया गया। मीनू बोथरा द्वारा मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा प्रमिला मालू ने सभी का स्वागत करते हुए इस कार्यक्रम की जानकारी दी। डॉक्टर मैडम ने Pep Smear Test क्यों करना चाहिए उसकी जानकारी पीपीटी के द्वारा दी गई। शरीर का एक ही कैंसर है जो प्रीवेंट हो सकता है, इसे 1925

में डिस्कवर किया गया था, यह हर साल 5 लाख महिलाओं को होता है इंडिया में 25% का रेशियो है। 22 साल से लेकर 30 साल की युवतियों को ज्यादा होता है। उन्होंने बताएं कि यह किस कारण से होती है जैसे जल्दी शादी हो जाना, बच्चों के बीच ज्यादा अंतराल रहना, पूर्ण न्यूट्रिशंस की कमी, साफ सफाई का ध्यान नहीं रखना और भी बहुत सारे कारण हैं जिससे यह कैंसर होने के चांसेस बढ़ जाते हैं। डॉक्टर मैडम ने बताया कि आपकी संस्था जो यह निःशुल्क कार्य कर रही है, बहुत ही सराहनीय कदम है। तेरापंथ महिला मंडल मंत्री सुमन मालू ने सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया।

# विद्यार्थियों में अहिंसा, नैतिकता, ईमानदारी, नशा मुक्ति के संस्कार रहे : आचार्यश्री महाश्रमण

छोटी-खाटू।

27 जनवरी, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के देदीप्यमान नक्षत्र, वर्तमान अधिशास्ता, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी अभी छोटी खाटू की धरा पर पावन प्रवास कर रहे हैं। आज मर्यादा समवसरण में आयोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की सन्निधि में भारत सरकार के शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान और राजस्थान के शिक्षा मंत्री श्री मदन दिलावर उपस्थित हुए। आचार्यश्री महाश्रमण मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री मनसुखलाल सेठिया ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने समुपस्थित जनता को अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन आगम उत्तराध्ययन में शिक्षा प्राप्ति में पांच प्रकार की बाधाएं बताई गई हैं। जिनके कारण व्यक्ति शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकता। इन पांच कारणों में पहला कारण बताया गया है- अहंकार। अहंकार के कारण शिक्षा प्राप्ति में बाधा हो सकती है। यदि विद्यार्थी के मन में ज्ञान के प्रति सम्मान और विद्या के प्रति विनय है तो वह शिक्षा के क्षेत्र में अधिक आगे बढ़ सकेगा। इसके साथ ही ज्ञानदाता के प्रति भी सम्मान का भाव होना चाहिये। विद्यार्थी को कुछ ज्ञान प्राप्त हो जाए तो उस ज्ञान का भी घमंड नहीं करना



चाहिये। अच्छा उपयोग करना चाहिये। दूसरी बाधा- क्रोध। क्रोध के कारण मस्तिष्क में जो प्रतिक्रिया रहती है तो ज्ञान प्राप्त करने में कठिनाई पैदा हो जाती है। अतः विद्यार्थी को अधिक क्रोध से बचते हुए अपने स्वभाव को शांत रखने का प्रयास करना चाहिये। तीसरी बाधा- प्रमाद। विद्यार्थी पढ़ाई को गौण कर अन्य चीजों जैसे खाने में, मौज-मस्ती, सिनेमा, नौद आदि में रस लेने लग जाए तो भला वह कितना ज्ञान ग्रहण कर पाएगा। इसलिए विद्यार्थी को प्रमाद से बचना चाहिये। चौथी बाधा रोग- बीमारी। शरीर में रोग उत्पन्न होने पर भी ज्ञान प्राप्ति में बाधा आ सकती है। अतः अपनी ओर से खान-पान आदि में संयम रखना चाहिये। जिससे

जितना संभव हो सके बीमारी से बचा जा सके। शरीर का रोग मुक्त होना ज्ञान प्राप्ति के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है। पांचवीं बाधा आलस्य का कहा गया है। इसलिए विद्यार्थी को आलस्य से बचना चाहिये। विद्यार्थी उद्यमी और परिश्रमशील हो तो शिक्षा की प्राप्ति कर सकता है। इन पांच बाधाओं से विद्यार्थी बच कर रहे तो वह ज्ञान के क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकता है। ज्ञान से प्रकाश मिलता है। अज्ञान अंधकार के समान है। ज्ञान होता है तो उसका सार होता है- आचार। ज्ञान के साथ-साथ आचार भी अच्छे बनने चाहिये। इसके लिये अच्छे संस्कारों का विकास भी बहुत आवश्यक होता है। विद्यार्थियों में शिक्षकों को शिक्षा के साथ-

साथ अच्छे संस्कारों का विकास भी करना चाहिये।

बच्चों को अहिंसा, नैतिकता, ईमानदारी, नशा मुक्ति आदि के संस्कारों भी दिये जाते रहें। आचार्य प्रवर ने उपस्थित विद्यार्थियों को सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति की प्रेरणा प्रदान करते हुए इनकी प्रतिज्ञाएं भी करवाईं। विद्यार्थियों ने सहर्ष प्रतिज्ञाएं स्वीकार की। मंगल प्रवचन में उपस्थित केन्द्रीय एवं राज्य शिक्षा मंत्रियों को संबोधित करते हुए पूज्य प्रवर ने कहा कि आज केन्द्रीय शिक्षा मंत्रीजी एवं राजस्थान राज्य मंत्रीजी का आगमन हुआ है। विद्यार्थियों में अच्छी शिक्षा एवं संस्कारों का अधिकधिक विकास हो, ऐसा कार्य

होता रहे। भारत जो धार्मिक-आध्यात्मिक देश है और यहां प्राचीन ग्रंथ विपुल मात्रा में उपलब्ध है। अच्छे ज्ञानवान विद्यार्थियों को तैयार कर देना बहुत अच्छी बात हो सकती है। राजनीति की सेवा का एक अच्छा माध्यम है। विद्यार्थियों में अच्छी शिक्षा व संस्कारों का विकास होता रहे। पूज्य प्रवर के मंगल प्रवचन के उपरान्त किसान उद्योग आयोग के अध्यक्ष श्री सी.आर. चौधरी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। राजस्थान के शिक्षा मंत्री श्री मदन दिलावर ने कहा कि मैं महान आचार्यश्री महाश्रमणजी के चरणों में वंदना करता हूं। हम सभी परम सौभाग्यशाली हैं कि अहिंसा, संयम और साधना के जीवंत प्रतीक आचार्यश्री महाश्रमणजी के दर्शन का अवसर मिल रहा है। हम सभी को आपसे मंगल प्रेरणा प्राप्त हो रही है। भारत सरकार के शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान ने अपने उद्बोधन में कहा कि परम श्रेष्ठ आचार्यश्री महाश्रमणजी को सादर प्रणाम करता हूं। यहां आप जैसे संत के पदार्पण से छोटी खाटू की यह धरती तीर्थ स्थल बन रही है।

मैं आपकी सन्निधि में एक विद्यार्थी बनकर उपस्थित हुआ हूं। मैंने आचार्यश्री के प्रवचनों के नोट्स बनाए हैं। आप की प्रेरणाएं सिर्फ विद्यार्थियों के लिए ही नहीं हम सबके लिए हैं। बुद्धि समाज हित में लगे। लाडलू प्रवास के दौरान पुनः आपसे कुछ ग्रहण करने के लिए उपस्थित होंगे।

## मन की पवित्रता-एकाग्रता होती है सुख प्रदान करने वाली : आचार्यश्री महाश्रमण

छोटी-खाटू।

28 जनवरी 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अखंड परिव्राजक, शांतिदूत, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने छोटी खाटू के मर्यादा समवसरण में समुपस्थित श्रद्धालुओं को अमृत देशना प्रदान करते हुए कहा कि आगम में मन को एक दुष्ट घोड़े की उपमा देते हुए कहा कि यह दुष्ट अश्व की तरह दौड़ता रहता है। कभी यह एकाग्र भी होता है, परन्तु इसकी चंचलता भी रहती है।

आज दसवें अधिशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का दीक्षा दिवस है, माघ शुक्ला दसमी। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने बालावस्था में ही साधुत्व स्वीकार कर लिया था। आचार्यश्री का आयुष्य लंबा था और अंतिम सांस तक उन्होंने संन्यास का पालन



किया। उनका अखंड संयम जीवन रहा जो एक बड़ी उपलब्धि है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रेक्षाध्यान करवाते थे जिससे कि मन की चंचलता कम हो सके। हमारे भीतर का भाव, कर्मण शरीर का प्रभाव हमारे मन को चंचल बनाने वाला होता है। भीतर की वृत्तियां-राग-द्वेष के प्रभाव से मन अधिक चंचल हो

जाता है। जैसे-जैसे राग-द्वेष के भाव कमजोर पड़ते हैं और वीतरागता आ जाए, फिर मन की समस्या नहीं रहती है। मन अच्छा अश्व भी बन सकता है। मन पवित्र और एकाग्र भी रह सकता है। मन में अच्छे विचार, अच्छी स्मृतियां और कल्पनाएं भी हमारे भीतर आ सकती हैं। मन को पवित्र संकल्प और कल्याणकारी विचारों वाला बनाने का प्रयास करना चाहिए। मन यदि पवित्र विचारों वाला और एकाग्र बन जाए तो मन, सुमन बन सकता है।

मन की पवित्रता और एकाग्रता सुख प्रदान करने वाली होती है। श्रुत की लगाम से मनरूपी घोड़े को काबू में कर लिया जाए तो मन रूपी अश्व भी अच्छा बन सकता है। मन की चंचलता का संबंध कषाय से है। कषाय और योग ये दो चीजें ही मन को चंचल बनाने के लिए जिम्मेदार होती हैं। जब कषाय क्षीण हो जाते हैं तो बाद में कोरा योग रहता है जिससे ज्यादा बंध नहीं हो सकता।

पूज्य गुरुदेव ने आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के दीक्षा दिवस के संदर्भ में आगे कहा कि उन्होंने अनेक प्रेक्षाध्यान शिविरों का निर्देशन और सान्निध्य प्रदान किया। वि.सं. 2087 को उनके दीक्षा के सौ वर्ष पूरे हो जाएंगे। ध्यान की साधना भी मन को एकाग्र बनाने में सहयोगी बन सकती है। अणुव्रत समिति छोटी खाटू के अध्यक्ष कपूरचंद बेताला ने अभिव्यक्ति दी और अणुव्रत के संकल्प पत्र आचार्य प्रवर के समक्ष प्रस्तुत किए।

पूज्य प्रवर ने मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। टीकमचन्द सेठिया ने अपनी अभिव्यक्ति दी। साध्वी मधुस्मिता जी ने अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी और सहवर्ती साधवियों के साथ गीत का संगान किया। तेरापंथी सभा विजयनगर बेंगलुरु के अध्यक्ष मंगलचंद कोचर ने गीत की प्रस्तुति दी। प्रतीक लोढ़ा ने गीत की प्रस्तुति दी और सरला धारीवाल ने भी अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

# आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

## साध्य-साधनवाद

प्रत्येक क्रिया के दो पहलु होते हैं- साध्य और साधन। आचार्य भिक्षु ने कहा- साध्य और साधन- दोनों शुद्ध हो तभी मोक्ष की साधना हो सकती है। अशुद्ध साधन से शुद्ध साध्य उपलब्ध नहीं हो सकता। जिसका साध्य जीवन-मुक्ति होता है उसे शुद्ध साधन का आलम्बन लेना ही होता है।

साधन-शुद्धि के आधार पर उन्होंने कहा- हिंसा मोक्ष का साधन नहीं हो सकती।

परिग्रह या प्रलोभन मोक्ष का साधन नहीं हो सकता।

बल-प्रयोग मोक्ष का साधन नहीं हो सकता।

मोक्ष का साधन होता है- अहिंसा, अपरिग्रह और हृदय-परिवर्तन।



## जानें तेरापंथ को-पहचाने स्वयं को

### विनीत कौन?

शिष्य बनना भाग्य की बात होती है, परन्तु विनीत शिष्य से उपमित होना सौभाग्य की बात होती है। किन्तु विनीत शिष्य किसे कहे क्या शिष्य होना पर्याप्त नहीं? शास्त्रकार कहते हैं 'विनीत' एक विशेषण है जो शिष्य को विशिष्ट बनाती है। उत्तराध्ययन सूत्र में लिखा है-

आणा निदेश करे-गुरुणमुख बाय कारएं।

इंडियाकार सम्पन्ने-से विणीए ति वुच्चई।

विनीत वह होता है जो गुरु की आज्ञा को अपना धर्म मानता है। वह "आजाए मामगं धम्म" सूत्र की पालना करता है। विनीत शिष्य की दूसरी पहचान है कि गुरु के निर्देश को बिना अनुनय किए पूरा करने में सदा तत्पर रहता है। विनीत शिष्य की तीसरी पहचान है कि वह सदा गुरु के उपपात में अर्थात् सेवा में अपने आप को नियोजित रखता है। विनीत शिष्य की चौथी पहचान यह है कि वह गुरु के इंगित के अनुसार ढल जाता है अर्थात् जो गुरु इंगित वह शिष्य का कार्य। पांचवा और अंतिम लक्षण यह इन सबसे सूक्ष्म है, गहरा है- वह है 'आकार' को समझना। इंगित से भी सूक्ष्म 'आकार' अर्थात् गुरु क्या चाहते हैं, उनकी आकृति से ही पहचान लेना।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्षु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

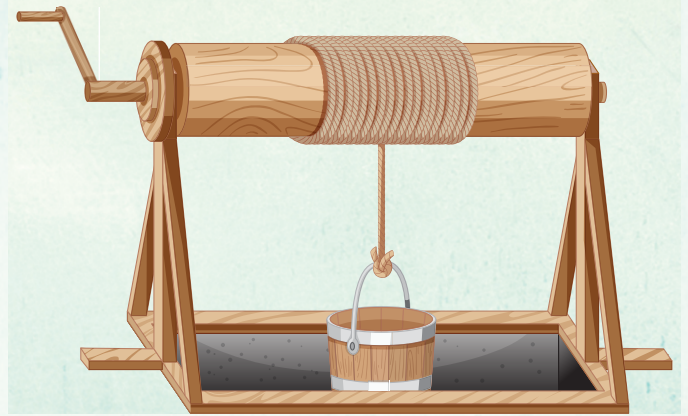


## भिक्षु की कहानी जयाचार्य की जुबानी

### भार नीचे ले जाता है

सिरियारी की घटना है। बोरा खिंवेसरा ने पूछा- नरक में जीव जाता है, उसे नीचे कौन खींचता है?

स्वामीजी बोले- कोई कूए में पत्थर डालता है उसे नीचे कौन खींचता है? वह स्वयं के भार से अपने आप तल तक चला जाता है। इसी प्रकार कर्म के भार से भारी बना हुआ जीव अपने आप में नरक में चला जाता है।



## क्या आप जानते हैं?



धनिया, पोटिना, नारियल आदि की चटनी में यदि टमाटर आदि के बीज साबुत रह जाएं या पत्ती बिना पीसी रह जाए तो उस चटनी को सचित्त माना जाए। भले वह प्रक्रिया मिक्सी आदि किसी भी विधा से की गई हो।

## साप्ताहिक प्रेरणा

॥ एक लोगस्स का ध्यान करे ॥

# किसी की आत्मा का कल्याण करना है लोकोत्तर दया : आचार्यश्री महाश्रमण

## आचार्यश्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के तीसरे चरण का हुआ आयोजन

छोटी खाटू।

29 जनवरी 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अखंड परिव्राजक, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के छोटी खाटू प्रवास का आज अंतिम दिवस पूज्य प्रवर की मंगल सन्निधि में आज आचार्यश्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के तीसरे चरण का शुभारंभ हुआ। महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने समुपस्थित जनता को अमृत देशना प्रदान करते हुए कहा कि शास्त्र में कहा गया है कि पहले ज्ञान फिर दया अर्थात् आचरण। सम्यक् ज्ञान के अनुरूप किया गया आचरण अच्छा आचरण होता है। दया शब्द बहुत प्रसिद्ध है। आचार्य भिक्षु के साहित्य में भी हमें दया की बात मिलती है। वर्तमान में आचार्यश्री भिक्षु का जन्म त्रिशताब्दी वर्ष मनाया जा रहा है। आज से आचार्यश्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के तृतीय चरण का त्रिदिवसीय समारोह शुरू हुआ है। आचार्य भिक्षु का साहित्य भी हमें सिद्धान्त के संदर्भ में मिलता है। अनुकंपा या दया अनेक रूपों में देखी जा सकती है। आचार्यश्री भिक्षु ने दया का विश्लेषण



करते हुए उसके दो रूप बताए हैं- एक आध्यात्मिक अर्थात् लोकोत्तर दया और दूसरी सांसारिक अर्थात् लौकिक दया। आचार्य भिक्षु ने कहा कि जीव अपने आयुष्य बल से जी रहे हैं, इनका जीना हमारी दया नहीं है। अनेक जीव, प्राणी, मनुष्य आदि मृत्यु को प्राप्त होते हैं, वे अपने आयुष्य के हिसाब से मर जाते हैं। उसमें हमें कोई पाप नहीं लगता

है। यदि कोई व्यक्ति हिंसा करता है तो वही हिंसा के फल का भागीदार होता है। छः काय रूप जीवों को मारने का त्याग करना अहिंसा रूप दया है। किसी की आत्मा का कल्याण करना लोकोत्तर दया है और किसी की शारीरिक संदर्भ की सेवा करना, बचाना लौकिक दया है। आचार्य प्रवर ने संतों द्वारा चोरों को दिए गए उपदेश से संदर्भित दृष्टान्त बताते

हुए कहा कि संतों द्वारा चोरों को दिए गए उपदेश से दो कार्य हुए, पहला यह कि चोरों ने आजीवन चोरी करने का त्याग किया जो आत्म कल्याण का कार्य हुआ- यह लोकोत्तर दया का कार्य है। दूसरा यह कि चोरों द्वारा चोरी का त्याग किए जाने से सेठ का धन चोरी होने से बच गया तो यह भौतिक कार्य हुआ यह लौकिक कार्य हुआ। इस दृष्टान्त से यह समझा जा सकता है कि कई बार मूल कार्य से अनेक कार्य भी सिद्ध हो सकते हैं। आचार्य प्रवर ने कहा कि छोटी खाटू में खूब धर्म की भावना बनी रहे। मुनि मेघकुमारजी ने अपनी पैतृक भूमि पर आचार्य प्रवर का अभिनंदन किया। शशि सेठिया ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मंडल-छोटी खाटू ने आचार्यश्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के संदर्भ में गीत की प्रस्तुति दी। छोटी खाटू विद्यालय के प्रिंसिपल सुखवीर डूडी, माली समाज की ओर से भंवरलाल टाक, जाट समाज की ओर से रामेश्वर खींचड़, माहेश्वरी समाज की ओर से कालूराम सारड़ा, अमित सारड़ा, पारीख समाज की ओर से नवरतनमल पारिख, नवल समाज

की ओर से लोकेश नवल, विश्व हिन्दू परिषद् की ओर से प्रकाश सारड़ा, पूर्व सरपंच कल्याण सिंह राठौड़, डॉ. दिलीप चौधरी, आर एस एस की ओर से दिनेश चौधरी, मुस्लिम समाज की ओर से सरवर कुरेशी, सैन समाज की ओर से बजरंग सैन, स्थानीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष डालमचंद धारीवाल आचार्यश्री महाश्रमण मर्यादा महोत्सव समिति के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। आचार्यश्री ने उपस्थित जनता को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में आचार्य प्रवर की यात्रा व्यवस्था से संदर्भित दायित्व हस्तांतरण का उपक्रम हुआ। इस संदर्भ में आचार्यश्री महाश्रमण मर्यादा महोत्सव समिति के महामंत्री प्रकाश बेताला ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी तथा योगक्षेम वर्ष व्यवस्था समिति-लाडनू की ओर से संगीत की प्रस्तुति दी गई। तदुपरांत आचार्यश्री महाश्रमण मर्यादा महोत्सव छोटी खाटू के पदाधिकारियों ने आचार्यश्री महाश्रमण योगक्षेम वर्ष व्यवस्था समिति के पदाधिकारियों को जैन ध्वज प्रदान कर व्यवस्था का हस्तांतरण हुआ।

### आचार्यश्री महाश्रमणजी : चित्रमय झलकियां

